सत्यमेव जयते

सतलुज धारा 2021-22

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़

राजभाषा पुरस्कार

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, अहमदाबाद, गुजरात में माननीय बीमा आयुक्त श्री मनोज कुमार शर्मा के कर–कमलों से 'ख' क्षेत्र में स्थित निगम कार्यालयों से प्रकाशित पत्रिकाओं के श्रेष्ठ संपादन के लिए **'सतलुज धारा'** के अंक 2020–21 हेतु प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

हिन्दी पत्रिका प्रतियोगिता
प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़
की हिन्दी गृह पत्रिका सतलुज धारा ने वर्ष
2020-2021 में क / ख / ग क्षेत्र से प्रकाशित पत्रिकाओं में से संपादन,
साज–सज्जा एवं सामग्री–प्रबंधन के लिए प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मुख्यालय, नई दिल्ली
दिनांक:

म शर्मा
बीमा आयुक्त

संरक्षक

अमरीश कुमार शर्मा
क्षेत्रीय निदेशक

संपादक

राजेश शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा)

उप-संपादक

अश्वनी कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सह-संपादक

कृष्णा कुमारी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

तृप्ति दीक्षित
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

टंकण एवं साजसज्जा सहयोग

नेहा भारद्वाज
प्रवर श्रेणी लिपिक

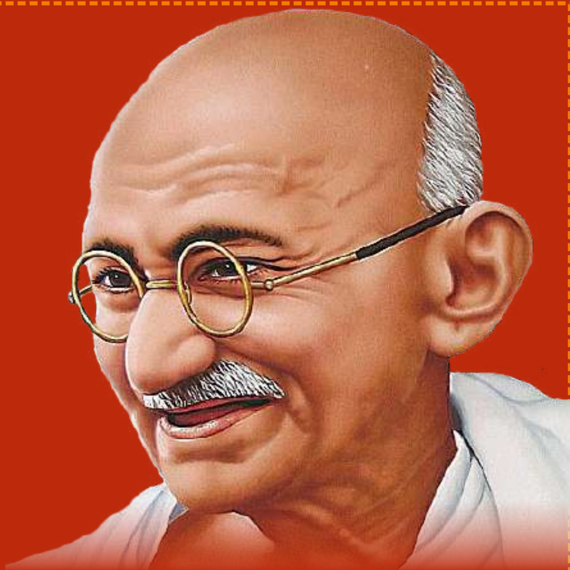

मैं हिंदी के जरिए प्रांतीय भाषाओं को दबाना नहीं चाहता। किंतु उनके साथ हिंदी को भी मिला देना चाहता हूँ।

भारत में स्वतंत्रता के बाद संसदीय लोकतंत्र लगातार मजबूत हुआ है। भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है जहाँ अनेक जातियों धर्मों और भाषाओं के बावजूद सबको बराबरी का हक मिला है। जहाँ स्त्री पुरूषों के बीच कोई असमानता नहीं है बल्कि भारत में महिलाएं जीवन के सभी क्षेत्रों में शीर्ष पर पहुंची हैं और हर क्षेत्र में वे अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने में सफल रही है।

–महात्मा गांधी

क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, प्लॉट सं.–03, सैक्टर–19ए
मध्य मार्ग, चंडीगढ़–160019

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। लेखों/रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक/रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	रचनाकार (श्री/सुश्री)/संदर्भ	पृष्ठ
1.	संदेश	महानिदेशक, बीमा आयुक्त, (राजभाषा) बीमा आयुक्त (का. एवं प्रशा.)	i-iii
2.	संरक्षक की कलम से/संपादकीय	अमरीश कुमार शर्मा, राजेश शर्मा	1–2
3.	पंजाब और चंडीगढ़ में क.रा.बी. योजना – एक नज़र	अमरीश कुमार शर्मा	3–4
4.	कर्मचारी राज्य बीमा निगम में औषधालय–सह–शाखा कार्यालयों की भूमिका	चन्द्र भूषण	5–7
5.	कार्योपयोगी हिन्दी ई–टूल्स	राजेश शर्मा	8–14
6.	विचार अमृत	एक परिचय	15
7.	ईमानदारी की मिसाल	तृप्ति दीक्षित	16–17
8.	राम	सुनीता	18
9.	ग्लोबल वार्मिंग –हीट वेव का आगमन	अश्वनी कुमार	19
10.	हिन्दी दिवस	एक परिचय	20
11.	राजभाषा पखवाड़ा तथा हिंदी दिवस समारोह	आयोजन	21–27
13.	हिंदी भाषा का महत्व	हितेश कौशिक	28–29
14.	कहानी	एक परिचय	30
15.	ईमानदारी का फल	नेहा भारद्वाज	31
16.	एकाग्रता	कृतिका शर्मा	32
14.	सार्थक जीवन का सूत्र	सुनीता	33
18.	देशप्रेम और राष्ट्र निर्माण	मोनिका खुल्लर	34–35
19.	अहंकारी मनुष्य	निपेन्द्र सिंह कटकवाल	36
20.	कविता	एक परिचय	37
21.	काबुल से एक बच्चा	संदीप पांचाल	38
22.	बारिश का अभिसार	वेद प्रकाश	39
23.	जहर का स्वाद	अनीश सूद	40
24.	जीवन	जगदीश चन्द सूर्यवंशी	41
25.	पापा तुम वापस आ जाओ	वर्तिका पाण्डेय	42
26.	यात्रा वृतांत	एक परिचय	43
27.	श्री राम तीर्थ मंदिर, अमृतसर	श्वेता जसवाल	44–45
28.	चंडीगढ़ के दर्शनीय स्थल	अश्वनी कुमार	46–48
29.	क्रिसमस और राफ्टिंग	दिवांशी वर्मा	49–50
30.	चुटकुले	अनीश सूद	51

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, **Govt of India)**

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

मुखमीत सिंह भाटिया (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

संदेश

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी पत्रिका **'सतलुज धारा'** का अगला अंक प्रकाशित करने जा रहा है। निश्चित ही यह पत्रिका साहित्यिक अभिरूचि, सृजनात्मक लेखन, विचारों के आदान–प्रदान इत्यादि के लिए एक रचनात्मक मंच प्रदान करेगी। साथ ही, यह पत्रिका निगम के कार्यकलापों को सभी कर्मचारियों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

(मुखमीत सिंह भाटिया)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

मनोज कुमार शर्मा
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ की राजभाषा के प्रति रुचि की परिचायक हिंदी गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि यह अंक कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों का परिचय कराने के साथ ही विविध–विषयक रचनाओं से अपने कार्मिकों के रचनात्मक गुणों को प्रखरता से उभारने में सफल रहेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(मनोज कुमार शर्मा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, **Govt of India**)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

एस. रविचन्द्रन
बीमा आयुक्त (का. एवं प्रशा.)

संदेश

जानकर खुशी हुई कि कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति रुचि हो बढ़ाने की दृष्टि से क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ की पत्रिका **'सतलुज धारा'** के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन जहां एक ओर अधिकारियों/कर्मचारियों को उनकी रचनात्मक क्षमता की अभिव्यक्ति का अवसर देता है वहीं दूसरी ओर क्षेत्र की विविध गतिविधियों का ब्यौरा भी एक ही साथ उपलब्ध हो जाता है।

आशा है यह पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

रविचन्द्रन
(एस. रविचन्द्रन)

संरक्षक की कलम से

क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब की गृह पत्रिका 'सतलुज धारा' का वर्ष 2021–22 का यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अतीव हर्ष की अनुभूति हो रही है। पंजाब क्षेत्र में अपने अल्पकालिक कार्यकाल के दौरान मैंने पाया कि 'ख' क्षेत्र में स्थित होने के उपरांत भी पंजाब क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग कार्यालयीन कामकाज में हो रहा है तथा क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त अधिकारी व कर्मचारी राजभाषा नियमों/विनियमों के अनुपालन के प्रति बहुत ही सजग एवं गंभीर हैं तथा कार्यालयी कार्य में हिंदी का प्रयोग कर राजभाषा नियमों/अनुदेशों का निष्ठा से अनुपालन करते हैं। सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इसके लिए प्रशंसा के पात्र हैं।

मुझे विदित हुआ कि क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ निगम मुख्यालय/नराकास, चंडीगढ़ तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय–समय पर उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन तथा गृह पत्रिका 'सतलुज धारा' के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए पुरस्कृत होता रहा है। इस वर्ष भी मुख्यालय द्वारा **'सतलुज धारा'** के उत्कृष्ट प्रकाशन के, लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है।

इन उपलब्धियों के लिए मैं व्यक्तिगत तौर पर क्षेत्रीय कार्यालय में तैनात सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का उनके सक्रिय सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

क्षेत्रीय कार्यालय से प्रकाशित गृह पत्रिका 'सतलुज धारा' पंजाब क्षेत्र के कार्मिकों की सृजनात्मकता तथा विभिन्न गतिविधियों को प्रतिबिंबित करने का एक अच्छा मंच साबित हुई है। पत्रिका में प्रकाशित उत्कृष्ट लेख यहाँ के कार्मिकों के राजभाषा हिन्दी में रचनात्मक विचारों तथा मौलिक सृजनशीलता में उनकी दक्षता का प्रमाण हैं। सच तो यही है कि रचनाकारों के स्तरीय लेख तथा प्रबुद्ध पाठकों की प्रतिक्रियाएं ही किसी पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन का आधार होते हैं।

पत्रिका प्रकाशन में सहयोगी साथियों तथा उत्कृष्ट लेख उपलब्ध करवाने के लिए सभी रचानाकारों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आशा है **'सतलुज धारा'** का यह अंक सभी पाठकों की कसौटी पर खरा उतरेगा। आपके तार्किक एवं मूल्यवान सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

(अमरीश कुमार शर्मा)
क्षेत्रीय निदेशक

संपादकीय

"मैं हरगिज यह नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिंदुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊँचे से ऊँचा चिंतन नहीं कर सकता"—ये उदगार निःसंदेह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने अनुभव के आधार पर साझा किए हैं। व्यवहारिक तौर पर यह सही भी है क्योंकि जब तक हम अपने परिवेश व अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप मूल चिंतन अपनी मातृभाषा में नहीं करेंगे तब तक हम अपेक्षित विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते। विश्व के सभी विकसित देशों की अपनी भाषा है। उनके नागरिक उनकी अपनी भाषा में चिंतन करते हैं और वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति सहज भाव से करते हैं। परंतु भारत जैसे देश में जहाँ अंग्रेजी और अंग्रेजीयत का बोलबाला रहा है। वहाँ लोगों के हालात ऐसे हैं कि वे पहले अपनी मातृभाषा में सोचते हैं और फिर उसका अनुवाद अंग्रेजी में कर अपने भावों को व्यक्त करते हैं। अनुवाद कभी पूर्ण नहीं होता। दूसरे हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि हमारे देश में अंग्रेजी रोजगार की भाषा भी बनती जा रही थी, जिसके कारण युवाओं का रूझान मातृभाषा/भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अंग्रेजी की ओर हो रहा था। अतः यदि हिंदी को व्यवहार, व्यापार और रोजगार की भाषा बना दिया जाए तो निःसंदेह हमारे देश की धरोहर हमारे युवा हर क्षेत्र में विशिष्ट करने का हौसला रखते हैं। अतः अगर हमें पूर्ण युवाशक्ति के साथ उन्नति के पथ पर अग्रसर होना है, तो हमें जन को जोड़ने की क्षमता रखने वाली हिंदी की प्रगति पर और बल देना होगा। भाषा वही सही है जो जनमानस की भाषा हो और जो जनमानस के लिए हो। यही सोचकर हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने राजभाषा नीति को अंगीकृत किया ताकि संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोया जा सके तथा देश की प्रगति को एक दिशा दी जा सके।

क्षेत्रीय कार्यालय में तैनात सभी अधिकारी व कर्मचारी राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति सदैव सजग रहे हैं। 'ख' क्षेत्र में स्थित होने के उपरांत भी पंजाब क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग कार्यालयीन कामकाज में हो रहा है। क्षेत्रीय कार्यालय से प्रकाशित गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** पंजाब क्षेत्र के कार्मिकों की सृजनात्मकता और विभिन्न गतिविधियों को प्रतिबिंबित करने का एक अच्छा मंच साबित हुई है। यह हमारे लिए हर्ष की बात है कि गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** उत्कृष्ट संपादन और हमारा कार्यालय राजभाषा नीति के श्रेष्ठतम कार्यान्वयन के लिए विभिन्न मंचों पर पुरस्कृत होते रहे हैं। **'सतलुज धारा'** के वर्ष 2020–21 अंक को मुख्यालय द्वारा उत्कृष्ट संपादन के लिए प्रथम पुरस्कार हेतु चुना गया। इसके लिए सभी को बधाई।

अंत में, मैं पत्रिका के संरक्षक, परामर्शदाता, मार्गदर्शक क्षेत्रीय निदेशक महोदय संपदाक मंडल तथा उन सभी निगम कार्मिकों के प्रति भी अपना आभार प्रकट करना चाहूंगा जिनकी रचनात्मक अभिरूचि के फलस्वरूप ही **"सतलुज धारा"** निरंतर प्रवाहित हो रही है। आशा है 'सतलुज धारा' का वर्ष 2021–22 का यह अंक सभी पाठकों की कसौटी पर खरा उतरेगा। आपके तार्किक एवं मूल्यवान सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

(राजेश शर्मा)
उप निदेशक (राजभाषा)

पंजाब और चंडीगढ़ में क.रा.बी. योजना - एक नज़र

अमरीश कुमार शर्मा
क्षेत्रीय निदेशक

योजना का कार्यान्वयन:

- क.रा.बी. योजना प्रारंभ में दिनांक 17.05.1953 को पंजाब में अमृतसर, जालंधर और लुधियाना जिलों के पाँच केंद्रों पर लागू की गई थी, जिसे अब दिनांक 01.09.2019 से 22 जिलों में पूर्णरूप से तथा 01 जिले में आंशिक रूप से कार्यान्वित कर विस्तारित किया गया है।
- चंडीगढ़ में क.रा.बी. योजना 07.10.1962 को कार्यान्वित की गई थी।
- क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब और चंडीगढ़, चंडीगढ़ में स्थित है और लुधियाना तथा जालंधर में 02 उप क्षेत्रीय कार्यालय भी स्थानीय पणधारकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नीचे दिए गए विवरणानुसार कार्य कर रहे हैं:–

क्षेत्र	दिनांक 31.03.2020 की स्थितिनुसार (मुख्यालय द्वारा अनुमोदित)	
	बीमाकृत व्यक्तियों की संख्या	नियोक्ताओं की संख्या
क्षेत्रीय कार्यालय पंजाब	466900	15937
क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़	167850	5921
उप क्षेत्रीय कार्यालय लुधियाना	420470	17082
उप क्षेत्रीय कार्यालय जालंधर	295520	11388
कुल	**1350740**	**50328**

- दिनांक 01.06.2010 से अन्य श्रेणी के प्रतिष्ठानों जैसे दुकानों, होटलों, पूर्वावलोकन थियेटरों, समाचार पत्र प्रतिष्ठानों, सड़क मोटर परिवहन उपक्रम, शैक्षिक संस्थानों, पंजाब और चंडीगढ़ में निजी चिकित्सा संस्थानों पर भी इस योजना का विस्तार किया गया है।

हितलाभ वितरण प्रणाली:

- पूरे पंजाब और चंडीगढ़ में फैले 24 शाखा कार्यालयों तथा 02 औषधालय–सह–शाखा कार्यालयों के नेटवर्क के माध्यम से बीमाकृत व्यक्तियों/बीमाकृत महिलाओं (आईपी/आईडब्ल्यू) को नकद हितलाभ प्रदान किए जाते हैं।
- चंडीगढ़ में स्थित 70 बिस्तरों वाले क.रा.बी. निगम, आदर्श अस्पताल और लुधियाना में स्थित 262 बिस्तरों वाले क.रा.बी. निगम, आदर्श अस्पताल, पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित राज्य संचालित 06 क.रा.बी. योजना अस्पतालों, क.रा.बी. निगम द्वारा संचालित 02 औषधालय–सह–शाखा कार्यालयों (डीसीबीओ) तथा 71 क.रा. बी. योजना औषधालयों के माध्यम से चिकित्सा हितलाभ प्रदान किया जाता है।

- इसके अलावा, कैशलेस उपचार के लिए क्षेत्र के निजी अस्पतालों/नर्सिंग होम/डायग्नोस्टिक सेंटरों के साथ अति विशिष्ट चिकित्सा उपचार और जांच के लिए टाई–अप व्यवस्था की गई है।

पंजाब और चंडीगढ़ में नई उपलब्धियां:

- दिनांक 28.03.2022 को क.रा.बी. निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ ने पंजाब के क.रा.बी. निगम हितलाभार्थियों को कैशलेस कैंसर उपचार प्रदान करने के लिए होमी भाभा कैंसर अस्पताल (टाटा मेमोरियल) संगरूर के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह न केवल राज्य भर में चिकित्सा सेवाओं को मजबूत करेगा बल्कि पंजाब की कैंसर बेल्ट की विशेष जरूरतों को भी पूरा करेगा।
- क.रा.बी. सोसाइटी, पंजाब का गठन और पंजीकरण सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत किया जा चुका है। अधिसूचना दिनांक 27.06.2017 को जारी की जा चुकी है। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार से दिनांक 25.10.2019 को क.रा.बी. सोसाइटी, पंजाब के गठन के लिए कार्योत्तर स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। सोसाइटी का पुनर्गठन राज्य सरकार के स्तर पर लंबित है क्योंकि भारत सरकार और निगम के दो सदस्यों को मुख्यालय कार्यालय द्वारा हटा दिया गया है। इस संबंध में राज्य सरकार को 24.06.2021 को अनुस्मारक भी जारी किया जा चुका है।
- क.रा.बी. सोसाइटी, चंडीगढ़ को 14.08.19 को सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम (1860 का XXI) के अंतर्गत पंजीकृत करवाया जा चुका है। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जा चुके हैं लेकिन निदेशक स्वास्थ्य सेवाएं (डीएचएस), चंडीगढ़ से एक नियोक्ता प्रतिनिधि और दो कर्मचारी प्रतिनिधियों का नामांकन अभी भी प्रतीक्षित है। दिनांक 23.06.2021 को एक अनुस्मारक जारी किया जा चुका है। सोसाइटी की अधिसूचना प्रक्रियाधीन है।
- एक ही स्थान पर नकद और चिकित्सा हितलाभ प्रदान करने के लिए राजपुरा और बरनाला में दो औषधालय–सह–शाखा कार्यालय (डीसीबीओ) खोले जा चुके हैं।
- यू.टी. प्रशासन की दिनांक 03.03.2020 की अंतिम अधिसूचना के अनुसार चंडीगढ़ में दिनांक 19.02.2020 से स्थापनाओं की व्याप्ति के लिए सीमा 20 कर्मचारियों से घटाकर 10 कर्मचारी कर दी गई है।
- यू.टी. प्रशासन की दिनांक 03.03.2020 की अंतिम अधिसूचना के अनुसार दिनांक 19.02.2020 से शैक्षणिक संस्थानों की चंडीगढ़ में व्याप्ति की गई है।
- पंजाब में केवल 01 आंशिक रूप से कार्यान्वित जिले यानी फिरोजपुर (जिला मुख्यालय) को छोड़कर शेष सभी जिलों को दिनांक 01.09.2019 से पूरी तरह से कार्यान्वित किया जा चुका है।

पंजाब और चंडीगढ़ के लिए भविष्य की योजना:

- पंजाब के फिरोजपुर जिले में क.रा.बी. योजना का पूर्ण कार्यान्वयन। पूरे जिले का सर्वेक्षण किया गया है। जिले में 64 इकाइयों और 2005 कर्मचारियों को व्याप्ति योग्य पाया गया है। चिकित्सा सुविधाओं की पुष्टि के लिए राज्य सरकार को पत्र और अनुस्मारक भेज दिया गया है। उत्तर प्रतीक्षित है।
- मुख्यालय कार्यालय द्वारा फिरोजपुर में एक नया औषधालय–सह–शाखा कार्यालय (डीसीबीओ) खोलने के लिए अनुमोदन प्रदान कर दिया गया है। तत्संबंधी प्रक्रिया शुरू कर दी गई है और आशा है कि फिरोजपुर में एक औषधालय–सह–शाखा कार्यालय (डीसीबीओ) शीघ्र काम करना शुरू कर देगा।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम में औषधालय-सह-शाखा कार्यालयों की भूमिका

चन्द्र भूषण
सहायक निदेशक

1. प्रस्तावना:

कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 एक एकीकृत आवश्यकता आधारित सामाजिक बीमा योजना है जिसके अन्तर्गत कर्मचारियों एवं उनके आश्रित पारिवारिक सदस्यों को उचित चिकित्सा देखभाल का आश्वासन मिलता है और कर्मचारियों को आकस्मिक बीमारी, चोट एवं मृत्यु के दौरान उचित समाजिक सुरक्षा मिलती है। चूंकि स्वास्थ्य हमारे संविधान के अनुसार राज्य की जिम्मेदारी है अर्थात् राज्य का विषय है इसीलिए कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 की धारा 58 के प्रावधानों के अंतर्गत चिकित्सा अर्थात् स्वास्थ्य लाभ देना पूर्णतः राज्य सरकारों पर निर्भर होता है।

पिछले कुछ वर्षो में कर्मचारी राज्य बीमा योजना का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है फिर भी चिकित्सा क्षेत्र अर्थात् चिकित्सा देखभाल की गति वांछित नहीं है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने एक विजन–2022 का खाका तैयार किया है जिसके अनुसार पूरे देश के संगठित व असंगठित क्षेत्र के कामगारों के लिए प्रत्येक जिले में औषधालय खोलने का प्रावधान है चाहे वह जिला पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अन्तर्गत व्याप्त हो और चाहे वहाँ पर राज्य सरकार का औषधालय ही क्यों न हो।

इसी तरह कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने दिनांक 29.5.2018 को अपनी 174वीं बैठक में औषधालय–सह–शाखा कार्यालय के गठन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है जिसके अनुसार प्रत्येक जिले में एक औषधालय–सह–शाखा कार्यालय का गठन किया जाना अपेक्षित है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राथमिक चिकित्सा व कर्मचारियों को मिलने वाले हितलाभों का प्रावधान एक ही छत के नीचे प्रदान करना है।

औषधालय–सह–शाखा कार्यालय देखने में भले ही दो इकाइयां हैं परन्तु यह दोनों अपना काम एकल इकाई के रूप में प्रदर्शित करेंगी। इसका मुख्य काम कर्मचारियों एवं उनके आश्रितजनों को दवाइयों की पूर्ति के साथ–साथ रेफर किए गए मरीजों को भी दवाइयों की पूर्ति करना है। औषधालय–सह–शाखा कार्यालय मरीजों को माध्यमिक उपचार के लिए रेफर भी करेगा। औषधालय–सह–शाखा कार्यालय कर्मचारियों के चिकित्सा प्रतिपूर्ति एवं सूची में शामिल नैदानिक केन्द्रों के बिलों के भुगतानों को भी मंजूरी प्रदान करेगा। औषधालय–सह–शाखा कार्यालय का सारा खर्चा अर्थात् परिचालन लागत कर्मचारी राज्य बीमा निगम वहन करेगा और राज्य सरकार को औषधालय–सह–शाखा कार्यालय चलाने के लिए कोई भी खर्चा नहीं उठाना होगा।

2.प्रशासनिक ढांचा:

औषधालय के प्रमुख सामान्य ड्यूटी चिकित्सा अधिकारी होते हैं और संबंधित राज्य के क्षेत्रीय निदेशक

उनके नियंत्रण अधिकारी होते हैं। औषधालय–सह–शाखा कार्यालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए निम्नलिखित श्रम शक्ति उपलब्ध करवानी होती है:–

क्रमांक	पद	संख्या
1.	जनरल ड्यूटी चिकित्सा अधिकारी	01
2.	सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	01
3.	फार्मासिस्ट (भेषज्ञ)	01
4.	सहायक नर्स	01
5.	लिपिक	02
6.	सहायक	01
7.	बहुकार्य स्टाफ	02

उपर्युक्त श्रम शक्ति की प्रति छः माह पश्चात् समीक्षा की जाती है और आवश्यकता के अनुसार श्रम शक्ति घटाई या बढ़ाई जा सकती है। औषधालय–सह–शाखा कार्यालय का प्रमुख एक वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी होता है और वह संबंधित राज्य के क्षेत्रीय निदेशक को जवाबदेह होता है ।

3.सामान्य दिशा–निर्देश: औषधालय–सह–शाखा कार्यालय दो कार्यात्मक शाखाएं होती हैं।

1. औषधालय 2. शाखा कार्यालय।

यह देखने में भिन्न लगती हैं परन्तु वास्तव में, यह एक ही छत के नीचे अपने–2 कामों को निष्पादित करती हैं। औषधालय–सह–शाखा कार्यालय का मुख्य काम परामर्श सेवा, बाह्य रोगी सेवा, निवारक सेवा, रोग निवारक सेवा, नैदानिक सेवा एवं संप्रेषण सेवा प्रदान करना होता है।

4. औषधालय के मुख्य काम

औषधालय के मुख्य काम निम्नलिखित हैं:–

क) कर्मचारियों व उनके आश्रितजनों को दवाइयों की प्रतिपूर्ति करना।

ख) कर्मचारियों को माध्यमिक उपचार के लिए रेफर करना।

ग) संशोधित नियोक्ता उपयोगिता औषधालय से रेफर किए गए कर्मचारियों को दवाइयों की पूर्ति।

घ) सूची में शामिल केमिस्टों व नैदानिक केन्द्रों के भुगतान का अनुमोदन करना आदि।

5. शाखा कार्यालय के काम:–

क) शाखा कार्यालय के मेनुअल में प्रत्यायोजित शक्तियों का इस्तेमाल करना।

ख) कर्मचारियों के चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिलों का रखरखाव, जांच एवं प्रतिपूर्ति का भुगतान।

ग) शाखा कार्यालय द्वारा विभिन्न प्रकार के हितलाभों को प्रदान करना जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है:–

1) बीमारी हितलाभ
2) स्थाई अपंगता हितलाभ
3) अस्थायी अपंगता हितलाभ
4) प्रसूति अवकाश हितलाभ
5) आश्रितजन हितलाभ
6) अंत्येष्टि व्यय
7) कोविड रिलीफ योजना
8) अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना के अन्तर्गत हितलाभ।

उपर्युक्त सभी हितलाभ सीधे इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली के माध्यम से दिए जाते हैं।

6. औषधालय–सह–शाखा कार्यालय की वित्तीय शक्तियाँ:

	शक्तियों का वर्णन	शक्तियों की सीमा
1)	सूची में शामिल किए गए कैमिस्टों एवं नैदानिक केन्द्रों के भुगतान का अनुमोदन/स्वीकृति।	पूर्ण शक्तियां (जो कि मनोनयन के समय तय की गई दर से ही)
2)	कर्मचारियों के चिकित्सा बिलों की प्रतिपूर्ति जोकि पैनल में शामिल कैमिस्ट व नैदानिक केन्द्र से संबंधित है।	₹ 10000/– प्रति मामला
3)	स्थानीय प्राधीकरण को किए जाने वाले वैधानिक भुगतान	पूर्ण शक्तियां
4)	अग्रदाय राशि	₹ 10000/–
5)	आकस्मिक व्यय	₹ 5000/–
6)	संशोधित नियोक्ता उपयोगिता औषधालय के भुगतान का अनुमोदन।	पूर्ण शक्तियां

7. वस्तु सूची प्रबन्धन :

औषधालय–सह–शाखा कार्यालय में भंडार व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए उचित वस्तु सूची प्रबन्धन अनिवार्य होते हैं। फार्मासिस्ट को नियमानुसार दवाइयों की मात्रा के मुताबिक उनका भंडार रखना व सभी दवाइयों का शाखा प्रबन्धक द्वारा निरीक्षण करवाना होता है। अधिकारी शाखा प्रबन्धक होता है। शाखा प्रबन्धक चिकित्सा अधिकारी को जवाबदेह होता है।

8. वस्तुसूची की प्राप्ति:

औषधालय–सह–शाखा कार्यालय में मांग पत्र के अनुसार और औसत उपयोगिता के मद्देनज़र दवाइयों की प्राप्ति निश्चित करनी होती है। सभी दवाइयाँ नोडल अस्पताल से प्राप्त होती हैं।

9. रिकार्ड प्रबन्धन:

औषधालय–सह–शाखा कार्यालय में रिकार्ड प्रबन्धन एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है। टाई–अप अर्थात् (अनुबंधित अस्पतालों) के बिलों की जाँच पड़ताल व सत्यापन के पश्चात् क्षेत्रीय कार्यालय में भुगतान के लिए भेजना होता है।

10. सामान्य सूचना:

प्रत्येक औषधालय–सह–शाखा कार्यालय भू–तल पर स्थित होना चाहिए। औषधालय–सह–शाखा कार्यालय में पीने के पानी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। नागरिक चार्टर का प्रावधान होना चाहिए जिसमें सभी किए जाने वाले कार्यों की निश्चित समय सारणी होगी। औषाधालय का शिकायत निवारण अधिकारी चिकित्सा अधिकारी होगा और शाखा प्रबन्धक हितलाभ के संबंध में शिकायत व शिकायत निवारण अधिकारी माना जाएगा। शाखा प्रबन्धक नकद हितलाभ का भुगतान क्षेत्रीय कार्यालय की अनुमति से ही करेगा। सभी कर्मचारियों को बैंक खाता खोलना अनिवार्य होता है क्योंकि वर्तमान में सभी भुगतान इलेक्ट्रानिक माध्यम से किए जाते हैं। कर्मचारियों एवं नियोक्ताओं को सूचना प्रौद्योगिकी संरचना की जानकारी देना भी उनका दायित्व होगा।

कुल मिलाकर औषधालय–सह–शाखा कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा योजना की सार्थकता सिद्ध करने में मील का पत्थर साबित हो सकता है। यह कर्मचारियों की चिकित्सा सुविधा व नकद हितलाभ के आबंटन में विशेष रूप से सहायक बन सकता है और इसके उत्थान के लिए निगम को दिन प्रतिदिन नए–नए कदम उठाने हितकारी सिद्ध होंगे।

कार्योपयोगी हिन्दी ई-टूल्स

(पाठकों की मांग पर पुनः उद्धृत)

राजेश शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा)

जैसा कि विदित है कि भारत के संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया है। अतः हिन्दी में कार्य करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य ही नहीं अपितु नैतिक दायित्व भी है। यह देखा गया है कि इस दायित्व को समझते हुए, अधिकतर कार्मिक हिन्दी में कार्य करना चाहते हैं परंतु अंग्रेजी में कार्य करने के आदी होने के कारण कुछ कार्मिकों को हिन्दी में कार्य करने में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लेकिन आज के कार्य–परिवेश में विकसित सूचना एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऐसी समस्त कठिनाइयों का समाधान उपलब्ध है।

भारत में कम्प्यूटर के आगमन तथा इसके पश्चात् के कुछ वर्षों में यह महसूस किया गया कि कम्प्यूटर तकनीक अंग्रेजी आधारित होने के कारण कम्प्यूटर के बढ़ते प्रचलन के साथ–साथ हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में कार्य करना कठिन होता जाएगा। परंतु भारत सरकार के साथ–साथ अनेक प्रतिष्ठित आईटी कंपनियों एवं भाषा प्रेमियों के अथक प्रयास एवं योगदान से यही सूचना–प्रौद्योगिकी तकनीक भारतीय भाषाओं के प्रचार–प्रसार एवं इन भाषाओं के व्यावहारिक प्रयोग को सरल, सहज एवं सुगम बनाने की वाहक बनी।

इस लेख के माध्यम से सूचना–प्रौद्योगिकी के ऐसे ही कुछ ई–टूल्स संबंधी जानकारी आपके साथ साझा कर रहा हूँ जिनके प्रयोग से भारतीय भाषाओं विशेषकर हिन्दी में न सिर्फ सरकारी कामकाज अपितु व्यक्तिगत कार्य करने भी आश्चर्यजनक रूप से सरल हो गए हैं ––––

1) **टंकण (Typing)** : भारतीय भाषाओं के कीबोर्ड मुख्य रूप से तीन भागों में वर्गीकृत हैं – इन्स्क्रिप्ट, फोनेटिक तथा टाइपराइटर (रेमिंगटन)।

अ) **इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड** : नियमित टंकण करने वाले व्यक्ति भारतीय भाषाओं में टंकण के लिए पूर्व में प्रचलित रेमिंग्टन कीबोर्ड के स्थान पर भारत सरकार द्वारा मानकीकृत इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड का प्रयोग करें क्योंकि––

- सी–डैक द्वारा विकसित **इन्स्क्रिप्ट** (इंडियन स्क्रिप्ट का लघुरूप) भारतीय लिपियों का मानक कीबोर्ड है।
- यह देवनागरी, बंगाली, गुजराती, गुरुमुखी, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, तमिल तथा तेलुगू सहित 12 भारतीय लिपियों का मानक कीबोर्ड है।
- इन्स्क्रिप्ट ले–आउट में भारतीय लिपियों के सभी यूनिकोड मानकीकृत चिह्नों को शामिल किया गया है।
- इस कीबोर्ड के ध्वन्यात्मक/वर्णक्रम गुण के कारण एक व्यक्ति जो कि किसी एक लिपि में इन्स्क्रिप्ट टाइपिंग जानता हो वह सभी भारतीय लिपियों में टाइप कर सकता है।
- इन्स्क्रिप्ट ले–आउट भारत सरकार का मानक कीबोर्ड होने के कारण सभी ऑपरेटिंग सिस्टम में डिफाल्ट अर्थात् पहले से मौजूद रहता है।
- यह सामान्यतः 'मंगल' (यूनिकोड आधारित–मानक) फॉन्ट में ही टाइप करता है।
- इन्स्क्रिप्ट सर्वाधिक गति वाली टाइपिंग है। आमतौर पर एक वर्ण के लिए एक कुंजी होने से समय कम लगता है एवं अशुद्धियाँ कम होती हैं।
- इन्स्क्रिप्ट का कुंजीपटल वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित है। इसमें सभी स्वर बाईं ओर एवं सभी व्यंजन दाईं ओर स्थापित हैं जिससे इसे याद करना अत्यन्त सरल है। साथ ही सभी संयुक्ताक्षरों के लिए भी अलग से कुंजी दी गई है।
- टंकण सीखना सरल है। मात्र हफ्ते भर के अभ्यास से ही इन्स्क्रिप्ट में लिखना शुरू किया जा सकता है।
- टचस्क्रीन डिवाइस यथा टैबलेट, पीसी तथा मोबाइल फोन आदि के लिए भी इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड पूर्णतः उपयुक्त है।

विंडोज आधारित कम्प्यूटर में इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड सक्रिय करने की प्रक्रिया :
Go to Start > Control Panel > Regional & Language > Keyboard and Languages Tab > Change Keyboards > Add Devnagari – INSCRIPT keyboard layout for Hindi

आ) फोनेटिक कीबोर्ड :
जो व्यक्ति हिन्दी टाइप सीखे बिना हिन्दी में टाइप करना चाहते हैं वे फोनेटिक कीबोर्ड का प्रयोग कर सकते हैं। इस कीबोर्ड के माध्यम से रोमन लिपि में टाइप किए गए शब्दों को उनकी ध्वनि के अनुरूप देवनागरी या किसी अन्य भारतीय भाषा में स्क्रीन पर पा सकते हैं। एक लिपि में टंकित शब्दों के दूसरी लिपि में परिवर्तन की इस प्रक्रिया को लिप्यांतरण (Transliteration) कहा जाता है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह शब्द का अनुवाद नहीं करता अपितु यह केवल एक लिपि में लिखे गए शब्द को उसकी ध्वनि के आधार पर दूसरी लिपि में परिवर्तित करता है। यह सामान्यतः 'मंगल' (यूनिकोड आधारित–मानक) फॉन्ट में ही टाइप करता है। उदाहरणतः शब्द 'Indian' (रोमन लिपि–अंग्रेजी) को फोनेटिक कीबोर्ड के माध्यम से लिखने पर यह 'इंडियन' (देवनागरी लिपि–हिन्दी) के रूप में प्राप्त होगा न कि 'भारतीय'। भारतीय भाषाओं के लिए कई प्रकार के फोनेटिक कीबोर्ड उपलब्ध हैं परंतु इनमें से तीन प्रमुख कीबोर्ड हैं––

क) Microsoft Indian language input टूल : यह टूल नौ भारतीय भाषाओं में लिप्यांतरण की सुविधा प्रदान करता है। यह टूल उपयोग में बेहद सरल एवं प्रभावशाली है। यह एक ऑफलाइन टूल है जिसे http://bhashaindia.com/Downloads/ से निःशुल्क डाउनलोड करके संस्थापित (Install) किया जा सकता है।

ख) Google Input टूल : यह टूल भारतीय भाषाओं सहित विश्व की लगभग 80 भाषाओं में लिप्यान्तरण की सुविधा प्रदान करता है। यह ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों रूप में उपलब्ध है। इस टूल के ऑनलाइन वेबपेज https://www.google.com/inputtools/ पर अपने विचार रोमन लिपि में टाइप करके लगभग 80 भाषाओं में से किसी भी भाषा की लिपि में लिख सकते हैं तथा इस प्रकार कुछ हद तक अन्य भाषा–भाषियों से संवाद कर सकते हैं। इसे https://www.google.com/inputtools/windows/ से निःशुल्क डाउनलोड करके संस्थापित(Install) किया जा सकता है।

ग) Hindi indic input टूल : यह टूल 12 भारतीय भाषाओं में लिप्यांतरण की सुविधा प्रदान करता है। यह कीबोर्ड प्रत्येक वर्ण के लिए कुंजी दबाने पर मार्गदर्शन हेतु फ्लोटिंग पॉप अप स्क्रीन दर्शाता है जिसके माध्यम से वांछित शब्द के लिए सुझाव प्रदान किए जाते हैं।
इसे http://bhashaindia.com/Downloads/Pages/home.aspx से निःशुल्क डाउनलोड करके संस्थापित(Install) किया जा सकता है।

इ) मोबाइल फोन पर हिंदी टंकण : मोबाइल फोन हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है। वाट्स एप, ई–मेल, फ़ेसबुक, ट्वीटर आदि अनेक प्रकार के सम्प्रेषण के साधनों में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। लगभग सभी मोबाइल फोन व ऐसे सॉफ्टवेयर हिन्दी में टाइप करने की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। तथापि मोबाइल फोन के लिए google indic keyboard एक ऐसा टूल है जो मोबाइल पर टंकण संबंधी सभी आवश्यकताओं का एकल समाधान प्रदान करता है। यह अंग्रेजी व हिन्दी टंकण के कई विकल्प एक ही स्क्रीन पर उपलब्ध करवाता है –

- ❖ एकल टच से हिन्दी से अंग्रेजी व अंग्रेजी से हिन्दी टंकण में अंतरण की सुविधा है।
- ❖ एकल टच से हिन्दी टंकण के चार विकल्पों में से किसी का भी चयन करके उपयोग किया जा सकता है।
- ❖ फोनेटिक कीबोर्ड के विकल्प से रोमन में लिखकर देवनागरी में लिप्यांतरण सरलता एवं सटीकता से प्राप्त किया जा सकता है।
- ❖ सीधे ही देवनागरी वर्णों का प्रयोग करके हिन्दी में लिखने का विकल्प उपलब्ध है।

❖ टच स्क्रीन के विकल्प के प्रयोग से भी वांछित शब्द लिखे जा सकते हैं।

❖ कीबोर्ड पर दिए गए माइक का प्रयोग करके बोलकर लिखने (श्रुतलेखन) की सुविधा बेहद उपयोगी है। इसके प्रयोग से बड़े–बड़े संदेश अत्यधिक तीव्रता एवं स्पष्टता से लिखे जा सकते हैं।

❖ यह कीबोर्ड मोबाइल के लगभग सभी एप यथा एसएमएस, वाट्स एप, फ़ेसबुक, ईमेल, डॉक्स आदि में टंकण के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इसे गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

1. प्ले स्टोर → Google Indic Keyboard → डाउनलोड → इंस्टाल
2. Setting→Additional Settings→Language and Input→ Keyboard & Input Method → Current Keyboard or Default Keyboard → English & Indic Languages → Google Indic Keyboard

Google Voice Typing Setting :

1. Setting → Language and Input → Google Voice Typing
2. Language → हिंदी (भारत) का चयन करें। एक समय पर एक ही भाषा का चयन कर सकते हैं।
3. Offline Speech Recognition → All → हिंदी (भारत)→ Download
   यदि मोबाइल फोन में Android 7.0 ओपरेटिंग सिस्टम है तो Setting → Language and Input → Virtual Keyboard → Google Voice Typing
4. जब भी टाइप करना हो कीबार्ड पर उपलब्ध माइक्रोफोन के बटन पर क्लिक करें और सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें। इससे आप एसएमएस, वाट्स एप, ई–मेल, गूगल डॉक्स आदि पर वॉयस टाइपिंग कर सकेंगे।

विंडोज मोबाइल फोन पर टाइपिंग के लिए :

1. http://bhashaindia.com/pages/windows10.aspx में जाकर फोनेटिक कीबोर्ड डाउनलोड करके इंस्टाल करें

आई फोन/आई पैड में हिंदी लिप्यांतरण कीबोर्ड :

setting → General → Keyboard → add new keyboard → हिंदी → new keyboard transliteration → Done

आई फोन/आई पैड पर गूगल वॉयस सेट करना :

1. Google Voice → sign in/Google acc. → link device → next → phone no. → verification code → submit
2. कोड सत्यापित होने पर आईफोन पर गूगल वॉयस सक्रिय हो जाएगा।

2) शब्दकोश :

किसी भी भाषा में कार्य करते हुए वांछित भाव को प्रकट करने के लिए सही शब्दों का प्रयोग किया जाना अति आवश्यक है। राजकीय कार्य के महत्व के अनुरूप सही शब्द का चयन और अधिक आवश्यक हो जाता है। इस कार्य के लिए कई ऑनलाइन व ऑफलाइन शब्दकोश उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ विशेष शब्दकोश निम्न प्रकार से हैं :–

अ) ई–महाशब्दकोश :

❖ यह सी–डेक के सहयोग से राजभाषा विभाग द्वारा विकसित ऑनलाइन शब्दकोश है।

❖ यह न सिर्फ समानार्थी शब्द या उसका अर्थ बताता है अपितु उसकी सम्पूर्ण प्रकृति तथा अंग्रेजी व हिन्दी वाक्य में उसके प्रयोग का उदाहरण भी प्रस्तुत करता है।

❖ इसे http://e-mahashabdkosh.rb-aai.in/HindiInterface.aspx लिंक पर उपयोग किया जा सकता है।

❖ इसे बुकमार्क करके सरलता से प्रयोग किया जा सकता है।

❖ यह सटीक प्रशासनिक शब्दों के चयन में उपयोगी है।

आ) प्रशासनिक तथा तकनीकी शब्दावली (CSTT) :

❖ प्रशासनिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा विकसित शब्दकोश www.cstt.nic.in पर ऑनलाइन उपलब्ध है।
❖ यह शासकीय प्रयोजन के लिए सटीक एवं मानक शब्द उपलब्ध करवाता है।
❖ साथ ही वांछित शब्द से संबद्ध समस्त अन्य शब्दों का विकल्प भी प्रदान करता है।
❖ इसे कार्यालय में सभी के डेस्क पर उपलब्ध करवाए गए इन्टरानेट के द्वारा सरलता से प्रयोग किया जा सकता है।
❖ यह अंग्रेजी से हिन्दी व हिन्दी से अंग्रेजी समानार्थी – दोनों प्रकार से शब्दों के चयन में उपयोगी है।

❖ इसे डेस्कटॉप, लैपटॉप व मोबाइल आदि पर बुकमार्क करके आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सकता है।
❖ यह अनुवाद कार्य के लिए भी बहुत उपयोगी है।

इ) हिन्खोज (Hinkhoj) ऑनलाइन शब्दकोश व मोबाइल एप :

❖ यह अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी दोनों प्रकार की आवश्यकताओं के लिए बेहतरीन शब्दकोश है।
❖ यह शासकीय एवं निजी प्रयोग के लिए अत्यंत उपयोगी है।
❖ शब्द की खोज के लिए बोलकर लिखने हेतु माइक का विकल्प दिया गया है।
❖ विस्तृत जानकारी के लिए यह वांछित समानार्थी शब्द के साथ–साथ उस शब्द की प्रकृति, उस शब्द का सही उच्चारण, शब्द से संबन्धित अन्य समानार्थी एवं विपरीतार्थक शब्द, शब्द की परिभाषा एवं अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं में वाक्य में प्रयोग भी दर्शाता है।
❖ यह शब्दकोश शब्दज्ञान में वृद्धि के लिए नियमित सुझाव, शब्द–समूह व प्रतिदिन 'वर्ड ऑफ द डे' / 'आज का शब्द' दर्शाता है।
❖ इस शब्दकोश में शब्द की वर्तनी की जांच के लिए 'Spell Checker' की सुविधा उपलब्ध है।

❖ इसके साथ–साथ शब्दज्ञान में रोचक तरीके से वृद्धि के लिए 'vocabulary words', 'word guess', 'crossword' तथा 'scrabble' जैसे खेल दिए गए हैं।

❖ यह शब्दकोश http://dict.hinkhoj.com/ पर प्रयोग किया जा सकता है।
❖ मोबाइल पर 'hinkhoj' एप को प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

वर्ष 1873 में महेन्द्र भट्टाचार्य द्वारा हिन्दी में "पदार्थ विज्ञान" की रचना की गई।

- हिंखोज मोबाइल एप ऑफलाइन भी काम करता है।
- मोबाइल एप में 'वर्ड स्कैनर' की विशेष सुविधा भी दी गई है जिसके द्वारा मोबाइल कैमरे का प्रयोग करके लिखे हुए/टंकित शब्द को स्कैन करके भी उसका समानार्थी शब्द/अर्थ ढूंढा जा सकता है।
- उपर्युक्त विशेषताओं के कारण यह विद्यार्थियों के लिए भी बेहद उपयोगी है।

3) गूगल ट्रांस्लेट (Google Translate) ऑनलाइन अनुवाद व मोबाइल एप :

- अनुवाद व शब्दार्थ संबंधी आवश्यकताओं के लिए यह एक उपयोगी टूल है।
- यह 100 से अधिक भाषाओं में अनुवाद की सुविधा उपलब्ध करवाता है।
- इसमें कीबोर्ड पर लिखकर व इनबिल्ट माइक के द्वारा बोलकर शब्दानुवाद या वाक्य अनुवाद किया जा सकता है।
- किसी दस्तावेज़ को अपलोड करके भी पूरे दस्तावेज़ का एक साथ अनुवाद किया जा सकता है।
- इसे https://translate.google.com/ पर ऑनलाइन प्रयोग किया जा सकता है।
- गूगल ट्रांस्लेट एप को प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।
- गूगल ट्रांस्लेट एप ऑफलाइन भी काम करता है।
- इस एप में कीबोर्ड के द्वारा अनेक भाषाओं में टाइप करके, माइक द्वारा बोलकर, लेख का चित्र लेकर अथवा टच पैनल के विकल्प से अंगुली द्वारा अक्षर या वर्ण बनाकर शब्द लिखकर भी अनुवाद किया जा सकता है।

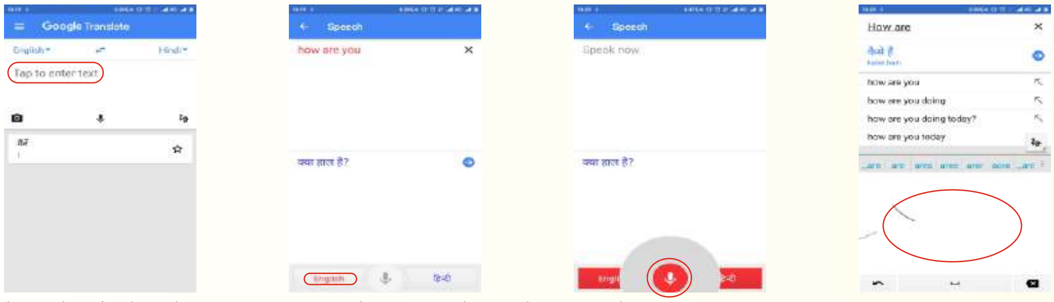

- फोन के कैमरे को वांछित शब्द के ऊपर ले जाने मात्र से ही यह शब्द का तत्काल अनुवाद उपलब्ध करवाता है।
- इस एप का उपयोग द्विभाषी बातचीत (Chat) में भी किया जा सकता है।
- फोन पर प्राप्त एसएमएस को भी इसके द्वारा अनुवाद करके पढ़ा जा सकता है।
- किसी टेक्स्ट को गूगल ट्रांस्लेट एप की स्क्रीन पर कॉपी करके अनुवाद किया जा सकता है।
- अनुदित पाठ को सीधे ही ब्लुटूथ, ईमेल, वाट्स एप, shareit आदि अनेक माध्यमों से भेजा जा सकता है।

यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इस प्रकार के किसी भी एप या सॉफ्टवेयर द्वारा किया गया अनुवाद मशीनी अनुवाद होता है जो केवल दिए गए शब्द या वाक्य का शाब्दिक अनुवाद करता है, भाव का नहीं। अतः इसमें वांछित अनुवाद की दृष्टि से त्रुटि की संभावना भी रह सकती है। इसलिए ऐसे सभी उत्पादों का प्रयोग करते हुए विवेक का प्रयोग करना आवश्यक है। तथापि ये उत्पाद दैनिक उपयोग में काफी सहयोगी हैं।

4) गूगल डॉक्स (Google Docs) ऑनलाइन दस्तावेज़ संपादक व मोबाइल एप : आपका अपना निजी सहायक (PA) :

- यह टूल हमारे कार्यालयीन व निजी कार्य का सबसे प्रभावी सहयोगी सिद्ध हो सकता है।
- यह किसी भी प्रकार के प्रभावी दस्तावेज़ को बनाने, उसको सम्पादित करने, सहेजने तथा अन्य के साथ सरलता एवं सहजता से साझा करने का अत्यंत प्रभावी टूल है।
- इसमें किसी भी दस्तावेज़ को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार के फोंट्स, एडिटिंग व स्टाइलिंग टूल, टेक्स्ट व पैरा फोरमेट टूल, लिंक इमेज या ड्राइंग आदि जोड़ने की समस्त सुविधाएं प्राप्त की गई हैं।

- ❖ कीबोर्ड द्वारा टाइप करने के अलावा इसमें दी गई माइक की सुविधा से हम स्वयं बोलकर (श्रुतलेखन द्वारा) अत्यधिक तीव्रता से बड़े–बड़े दस्तावेज़ तैयार कर सकते हैं।
- ❖ ये दस्तावेज स्वतः गूगल ड्राइव पर सहेजे जाते हैं जिन्हें कहीं भी, कभी भी प्रयोग किया जा सकता है।
- ❖ इस प्रकार सहेजे गए दस्तावेज गूगल डॉक्स के एप के साथ सिंक्रोनाइज़ रहते हैं, जिनका प्रयोग ऑफलाइन रहते हुए भी मोबाइल पर किया जा सकता है।
- ❖ ऑनलाइन डॉक्स में उपलब्ध सभी सुविधाएं मोबाइल एप पर भी उपलब्ध हैं जिनके द्वारा किसी भी दस्तावेज़ को न सिर्फ उसी कुशलता एवं सहजता से बनाया अपितु संपादित भी किया जा सकता है जो मोबाइल के ऑनलाइन होते ही ऑनलाइन उपलब्ध डॉक्स के साथ सिंक्रोनाइज़ हो जाता है।

- ❖ वाक् से पाठ द्वारा दस्तावेज़ तैयार करने की गति एवं शुद्धता वक्ता के उच्चारण की गति, शुद्धता एवं स्पष्टता पर निर्भर करती है।
- ❖ गूगल डॉक्स पर तैयार या सहेजे गए दस्तावेज़ को वर्ड, ओडीटी, पीडीएफ सहित अनेक फॉर्मेट में डाउनलोड किया जा सकता है तथा ब्लुटूथ, ईमेल, व्हाट्स एप, shareit आदि अनेक माध्यमों से भेजा जा सकता है।
- ❖ गूगल डॉक्स केवल क्रोम ब्राउज़र पर कार्य करता है।
- ❖ इसे प्रयोग करने के लिए गूगल अकाउंट का होना अनिवार्य है जिसके माध्यम से हम अपने गूगल डॉक्स में लॉग इन कर सकें।
- ❖ गूगल डॉक्स को प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।
- ❖ मोबाइल फोन में गूगल डॉक्स पर कार्य करने तथा कम्प्यूटर पर गूगल डॉक्स में कार्य करने के लिए एक ही गूगल अकाउंट का प्रयोग करने पर दोनों में फाइलें समान रूप से सिंक्रोनाइज़ रहेंगी।

कंप्यूटर पर प्रयोग की प्रक्रिया :

http://google.com → गूगल एप्स → more → गूगल डॉक्स एप → जीमेल आई डी लॉगइन → नया सहेजा गया दस्तावेज़ → टूल्स → वॉइस टाइपिंग → पॉप अप माइक्रोफोन बॉक्स → हिन्दी / वांछित भाषा →

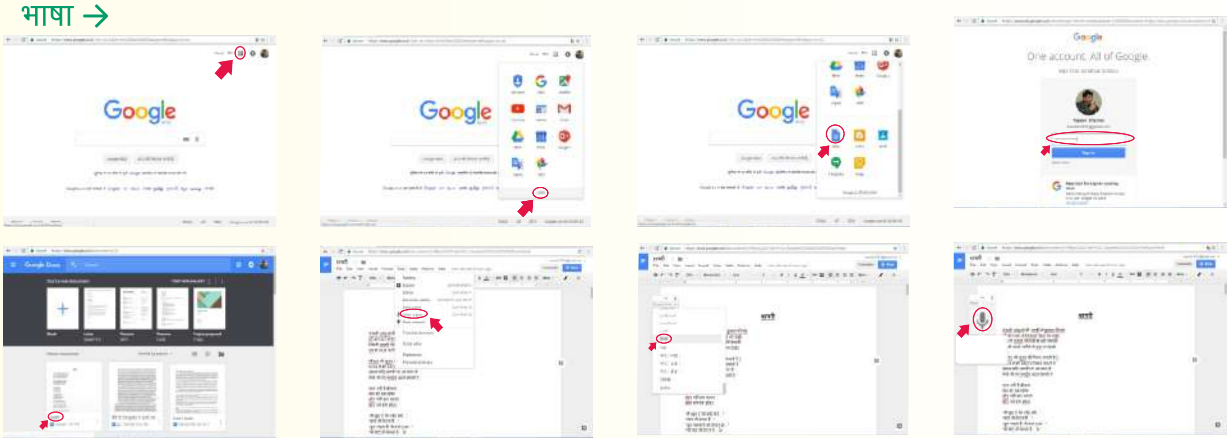

माइक्रोफोन पर क्लिक करके सामान्य गति और वॉल्यूम से स्पष्ट रूप में अपना पाठ बोलें। रोकने के लिए माइक बंद करें। त्रुटि ठीक करने के लिए वांछित पाठ का चयन करके पुनः बोलें।

वर्ष 1893 में "काशी नागरी प्रचारिणी सभा" की स्थापना की गई।

5) <u>मंत्र राजभाषा</u> : राजभाषा विभाग की वैबसाइट के लिंक https://mantra-rajbhasha.rb-aai.in/ पर अनुवाद के लिए इस टूल का प्रयोग किया जा सकता है। यहाँ टाइप करके अथवा किसी टेक्स्ट को कॉपी–पेस्ट करके अनुवाद किया जा सकता है। यहाँ से अनूदित पाठ को कॉपी–पेस्ट करके वांछित फाइल में प्रयोग कर सकते हैं।

6) <u>श्रुतलेखन</u> : राजभाषा विभाग की वैबसाइट के लिंक https://shrutlekhan-rajbhasha.rb-aai.in/पर पंजीकृत करके वाक से पाठ(बोलकर लिखने) के लिए इस टूल का प्रयोग किया जा सकता है।

7) <u>प्रवाचक</u> : इसे राजभाषा विभाग की वैबसाइट के लिंक https://pravachak-rajbhasha.rb-aai.in/UserRegistration.aspx से अपने कम्प्यूटर पर डाउनलोड करके दिए गए स्थान पर पाठ को टंकित करके या किसी पाठ को पेस्ट करके सुना जा सकता है। इसमें बोलने की गति को धीमा या तीव्र किया जा सकता है।

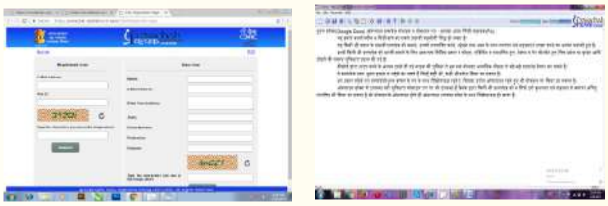

8) <u>टी.बी.आई.एल.(TBIL) डाटा कन्वर्टर</u> :

- ❖ यह भारतीय भाषाओं के मध्य लिप्यांतरण का अत्यंत प्रभावी टूल है।
- ❖ यह ऑफलाइन टूल है।
- ❖ यह नौ भारतीय भाषाओं (बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, पंजाबी, तमिल व तेलुगू) के विभिन्न फॉन्ट के एक–दूसरे में परिवर्तन की सुविधा प्रदान करता है।
- ❖ यह उक्त नौ भाषाओं के अनेक यूनिकोड/नॉन–यूनिकोड फॉन्ट के उसी भाषा या इन नौ में से दूसरी भाषा के यूनिकोड/नॉन–यूनिकोड फॉन्ट में सरल एवं सहज लिप्यांतरण की सुविधा प्रदान करता है।
- ❖ इसका प्रयोग किसी टेक्स्ट, वर्ड फाइल, एक्सेल शीट, एक्सैस (aaccess) अथवा एस.क्यू.एल. फ़ाइल के लिए किया जा सकता है।

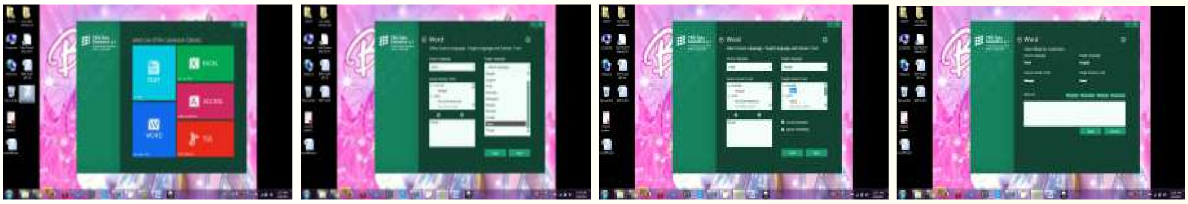

- ❖ इसे http://bhashaindia.com/Downloads/Pages/newpage.aspx पर 'फॉन्ट टूल्स' से डाउनलोड करके इन्स्टाल किया जा सकता है। उपर्युक्त टूल्स के उपयोग से निश्चित ही हिन्दी सहित कई भाषाओं में कार्य करना काफी सरल हो गया है। कृपया आवश्यकता के अनुरूप भाषा प्रौद्योगिकी के इन विशिष्ट टूल्स का प्रयोग करें और अपने संवैधानिक व नैतिक दायित्व के निर्वहन के साथ–साथ निजी जीवन में भी स्वभाषा का प्रयोग करें।

जय हिन्द, जय हिन्दी

विचार अमृत

विचार जीवन दर्शन का सारामृत होते हैं जो इस संसार के समस्त चराचर का मूल भी हैं। विचार ही किसी कृति का आधार बनते हैं, विचार ही मनुष्य मात्र के जीवन को दिशा देने का आधार होते हैं, महा मनीषियों के विचारामृत ही समाज के पथ प्रदर्शक होते हैं, जिन्हें आत्मसात कर एक साधारण से साधारण आदमी भी अपने जीवन को धन्य बना लेता है। वास्तव में विचार ही वह शक्ति है जो सर्वप्रथम मस्तिष्क में आते हैं और तत्पश्चात् वे विचार किसी वस्तु, रचना या कृति आदि के रूप में साकार रूप ले लेते हैं।

क.रा.बी. निगम के हमारे कर्मियों ने भी अपनी लेखनी से विचार उकेरे हैं .. आइए देखें, किस सीपी से कैसा मोती निकलता है....

ईमानदारी की मिसाल

तृप्ति दीक्षित
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

94 साल के एक बूढ़े व्यक्ति को मकान मालिक ने किराया न दे पाने पर किराए के मकान से निकाल दिया। बूढ़े के पास एक पुराना बिस्तर, कुछ एल्युमीनियम के बर्तन, एक प्लास्टिक की बाल्टी और एक मग आदि के अलावा शायद ही कोई सामान था। बूढ़े ने मालिक से किराया देने के लिए कुछ समय देने का अनुरोध किया। पड़ोसियों को भी बूढ़े आदमी पर दया आयी, और उन्होंने मकान मालिक को किराए का भुगतान करने के लिए कुछ समय देने के लिए मना लिया। मकान मालिक ने अनिच्छा से ही उसे किराया देने के लिए कुछ समय दिया। बूढ़ा अपना सामान अंदर ले गया। रास्ते से गुजर रहे एक पत्रकार ने रुक कर यह सारा नजारा देखा। उसने सोचा कि यह मामला उसके समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिए उपयोगी होगा। उसने एक शीर्षक भी सोच लिया, "क्रूर मकान मालिक, बूढ़े को पैसे के लिए किराए के घर से बाहर निकाल देता है।" फिर उसने किराएदार बूढ़े की और किराए के घर की कुछ तस्वीरें भी ले ली। पत्रकार ने जाकर अपने प्रेस मालिक को इस घटना के बारे में बताया। प्रेस के मालिक ने तस्वीरों को देखा और हैरान रह गए। उन्होंने पत्रकार से पूछा कि क्या वह उस बूढ़े आदमी को जानता है? पत्रकार ने कहा, नहीं।

अगले दिन अखबार के पहले पन्ने पर बड़ी खबर छपी। शीर्षक था, "भारत के पूर्व प्रधान मंत्री गुलजारीलाल नंदा एक दयनीय जीवन जी रहे हैं"। खबर में आगे लिखा था कि कैसे पूर्व प्रधान मंत्री किराया नहीं दे पा रहे थे और कैसे उन्हें घर से बाहर निकाल दिया गया था। टिप्पणी की थी कि आजकल फ्रेशर भी खूब पैसा कमा लेते हैं। जबकि एक व्यक्ति जो दो बार पूर्व प्रधान मंत्री रह चुका है और लंबे समय तक केंद्रीय मंत्री भी रहा है, उसके पास अपना खुद का घर भी नहीं।

दरअसल गुलजारीलाल नंदा को स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण रु. 500/– प्रति माह भत्ता मिलता था। लेकिन उन्होंने यह कहते हुए इस पैसे को अस्वीकार किया था कि उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों के भत्ते के लिए लड़ाई नहीं लड़ी। बाद में दोस्तों ने उसे यह स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया यह कहते हुए कि उनके पास आय का अन्य कोई स्रोत नहीं है। इन्हीं पैसों से वह अपना किराया देकर गुजारा करते थे।

अगले दिन वर्तमान प्रधान मंत्री ने मंत्रियों और अधिकारियों को वाहनों के बेड़े के साथ उनके घर भेजा। इतने वीआइपी वाहनों के बेड़े को देखकर मकान मालिक दंग रह गया। तब जाकर उसे पता चला कि उसका किराएदार, श्री. गुलजारीलाल नंदा भारत के पूर्व प्रधान मंत्री थे। मकान मालिक अपने दुर्व्यवहार के लिए तुरंत गुलजारीलाल नंदा के चरणों पर झुक गया। अधिकारियों और वीआईपीयों ने गुलजारीलाल नंदा से सरकारी आवास और अन्य सुविधाएं को स्वीकार करने का अनुरोध किया। श्री गुलजारीलाल नंदा ने इस बुढ़ापे में ऐसी

सुविधाओं का क्या काम, यह कह कर उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। अंतिम श्वास तक वे एक सामान्य नागरिक की तरह, एक सच्चे गांधीवादी बन कर ही रहे। 1997 में सरकार ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया।

बताते चलें कि गुलजारी लाल नंदा एक भारतीय राजनीतिज्ञ थे। उनका जन्म सियालकोट, पंजाब, पाकिस्तान में हुआ था। वे प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की मृत्यु पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री बने। कांग्रेस पार्टी के प्रति समर्पित गुलजारी लाल नंदा प्रथम बार पंडित जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद 1964 में कार्यवाहक प्रधानमंत्री बनाए गए। दूसरी बार लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद 1966 में कार्यवाहक प्रधानमंत्री बने। इनका कार्यकाल दोनों बार उसी समय तक सीमित रहा जब तक कि कांग्रेस पार्टी ने अपने नए नेता का चयन नहीं कर लिया।

नंदा बॉम्बे की विधानसभा में 1937 से 1939 तक और 1947 से 1950 तक विधायक रहे। इस दौरान उन्होंने श्रम एवं आवास मंत्रालय का कार्यभार मुम्बई सरकार में रहते हुए देखा। 1947 में 'इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस' की स्थापना हुई और इसका श्रेय नंदाजी को जाता है। मुम्बई सरकार में रहने के दौरान गुलजारी लाल नंदा की प्रतिभा को रेखांकित करने के बाद इन्हें कांग्रेस आलाकमान ने दिल्ली बुला लिया। यह 1950–1951, 1952–1953 और 1960–1963 में भारत के योजना आयोग के उपाध्यक्ष पद पर रहे। ऐसे में भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में इनका काफी सहयोग पंडित जवाहरलाल नेहरू को प्राप्त हुआ।

वर्ष 1930 के दशक में शैलेन्द्र मेहता द्वारा हिन्दी टाइपराइटर का विकास किया गया।

राम

सुनीता
सहायक

“तुलसी मेरे राम को रीझ भजो या खीज
मौन पड़ा जाये सभी उल्टा सीधा बीज”

भूमि में बोये बीज उल्टे पड़े हों या सीधे, फिर भी कालांतर में फसल बन जाती है। इसी प्रकार ईश्वर का स्मरण अथवा सुमिरन कैसे भी अर्थात् मन से अथवा बिना मन से किया जाए तो उसका फल अवश्य ही मिलता है।

गांधी जी के जीवन में राम नाम

गांधी जी ने परमेश्वर से प्रार्थना करते रहने की एक ऐसी राह हम सबको दिखाई थी कि अगर हम उनकी इस एक बात को ही मान लेते तो आज हमारा चरित्र इतना नहीं बिगड़ता। गांधी जी ने स्वराज्य के आंदोलन के लिए सारे देश में अनेक बार भ्रमण किया और प्रातः सायं की प्रार्थना सभाओं में उन्होंने करोड़ों लोगों को राम नाम जाप की प्रेरणा दी। गांधी जी ने राम नाम जाप का बहुत प्रचार किया।

काका कालेकर ने एक लेख में लिखा है कि गांधी जी रात को सोते समय अपने सिरहाने माला रखकर सोते थे। जब सब सो जाते थे, गांधी जी समय पाते ही चुपचाप माला के साथ राम नाम जाप किया करते थे। यह माला उनको ब्रह्मलीन महान तपस्वी स्वामी सत्यानंद जी ने शिमला में राय बहादुर मोहन लाल गरली निवासी की कोठी पर दी थी।

गांधी जी अंतिम क्षणों तक उस माला से ही जाप करते रहे। मरते समय भी उनके मुँह से आखिर में ‘हे राम’ निकला।

मधुर मधुर नाम राम राम राम राम

ग्लोबल वार्मिंग -हीट वेव का आगमन

अश्वनी कुमार
बहुकार्य स्टाफ

पृथ्वी की सतह पर औसतन तापमान का बढ़ना ग्लोबल वार्मिंग कहलाता है। ग्लोबल वार्मिंग दुनिया के सभी देशों के लिए एक बड़ी समस्या है जिसका समाधान सकारात्मक शुरूआत के साथ किया जाना चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग के विभिन्न कारक हैं जिसमें कुछ प्रकृति प्रदत्त हैं तथा कुछ मानव निर्मित कारक हैं। ग्लोबल वार्मिंग में वृद्धि के सबसे प्रमुख कारकों में ग्रीन हाऊस गैसे हैं जो कुछ प्राकृतिक प्रक्रियाओं व मानवीय क्रियाओं से उत्पन्न होती हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप हर 50 वर्ष में आने वाली हीट वेव (भीषण गर्मी) अब 10 वर्ष में आने लगी है। साथ ही हर दशक में अत्याधिक बारिश होने और सूखा पड़ने लगा है। सयुंक्त राष्ट्र के इंटरगवर्नल पैनल ऑन कलाईमेट चेंज (आई.पी.सी.सी.) की रिपोर्ट के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग के कारण भीषण गर्मी, भारी बारिश और सूखे की आशंका बढ़ गई है। हम इस जलवायु परिवर्तन के असर का अनुभव करने लगे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर हम पृथ्वी का औसतन तापमान 1.5 डिग्री पर स्थिर कर लेते हैं तो मौसम की खराब स्थितियों से बचा जा सकता है।

पेरिस गोल्सः– लगभग सभी देशों ने 2015 के पेरिस जलवायु समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इसका उद्‌देश्य ग्लोबल वार्मिंग को 2 सेल्सियस से नीचे रखना है। परंतु आई.पी.सी.सी. की रिपोर्ट का निष्कर्ष निकालेंगे तो पाएंगे कि 2040 के दशक तक दुनिया 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा को पार कर सकती है।

भारत पर प्रभावः– हिंदूकुश हिमालय में हिम नदी का पीछे हटना, समुद्र के स्तर में वृद्धि और बाढ़ की ओर ले जाने वाले चक्रवातों के मिश्रित प्रभाव, एक अनिश्चित मानसून, जलवायु परिवर्तन–ये सब असर भारत पर पड़ने की संभावना है। आई.पी.सी.सी. ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि इनमें से अधिक प्रभाव ऐसे हैं जो बदले नहीं जा सकते।

भारत में पहाड़ी क्षेत्रों में गर्मी के चरम में बढ़ोतरी हुई है जबकि ठंडे चरम में कमी आई है। मालूम हो कि उत्तराखंड में 7 फरवरी 2021 को एक ग्लेशियर के टूटने से ऋषिगंगा और धौलीगंगा घाटियों में अचानक बाढ़ आ गई थी इसकी चपेट में आकर करीब 200 लोगों की जान चली गई थी। यह सब ग्लोबल वार्मिंग की ही देन है। एक अध्ययन के अनुसार अगर समुद्र का स्तर 50 से.मी. भी बढ़ जाता है तो वह भारतीय बंदरगाह शहरों – चेन्नई, कोच्चि, कोलकाता, मुम्बई, सूरत और विशाखापत्तनम को बाढ़ से प्रभावित कर देगा।

निष्कर्षः– 60 देशों के 200 वैज्ञानिकों द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अगले 20 साल में 1.5 डिग्री सेल्सियस तक तापमान बढ़ेगा। भारत और पड़ोसी देशों में हिमालय अपरिवर्तनीय परिवर्तनों का सामना कर सकता है।

हिन्दी दिवस

14 सितम्बर

14 सितम्बर भारत का वो गौरवशाली दिन, जब हमने हिंदी को आधिकारिक रूप से राजभाषा के रूप में चुनते हुए एक अहम् निर्णय लिया था, जो देश की एकता, अखंडता व विकास के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। उसी गौरवशाली दिन की स्मृति में हिन्दी दिवस के राजभाषा उत्सव को मनाने के कुछ चित्र–जहाँ हिन्दी है, गर्व है, उत्सव है और फिर से राजभाषा हिन्दी ही है...

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ में राजभाषा पखवाड़ा तथा हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

मुख्यालय के निदेशानुसार राजभाषा के प्रचार व प्रसार के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ में दिनांक 01.09.2021 से दिनांक 15.09.2021 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के आरंभ होने से पहले ही एक परिपत्र जारी कर राजभाषा पखवाड़े का महत्व बताते हुए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने व पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न् हिंदी प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर प्रतिभागिता करने का अनुरोध किया गया था। 01 सितंबर 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में प्रमुख स्थानों पर राजभाषा पखवाड़े के संबंध में आकर्षक बैनर, मुख्यालय से प्राप्त 'हिंदी भाषा से संबंधित सूक्तियां' तथा 'जांच–बिंदुओं' के पोस्टर लगा दिए गए थे। पखवाड़े के दौरान राजभाषा कार्मिकों ने विभिन्न शाखाओं में संपर्क कर हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्मिकों का सहयोग किया। कोविड–19 महामारी के चलते राजभाषा पखवाड़े के दौरान स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय–समय पर परिचालित मानक संचालन प्रक्रिया(एस.ओ.पी.) के अनुदेशों का पालन करते हुए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं का आयोजन निम्नलिखित कार्यक्रम के अनुसार किया गया :–

क्र.सं	दिनांक	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगिता का माध्यम	प्रतिभागियों की संख्या
1.	06.09.2021	हिंदी निबंध प्रतियोगिता	गूगल फार्म्स	23
2.	07.09.2021	हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता	गूगल फार्म्स	43
3.	08.09.2021	राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता	गूगल फार्म्स	50
4.	09.09.2021	वाक् प्रतियोगिता	माइक्रोसॉफ्ट टीम	11

प्रतियोगिताओं के आयोजन के संबंध में पखवाड़ा शुरू होने से पहले ही सभी शाखाओं तथा अधीनस्थ शाखा कार्यालयों/औषधालयों–सह–शाखा कार्यालयों को क्षेत्रीय निदेशक महोदय का अनुमोदन प्राप्त कर एक परिपत्र जारी किया गया जिसमें प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कर्मचारियों के वाट्सएप नं. तथा ई–मेल मांग लिए गए थे। विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं को गूगल फॉर्म्स व ई–मेल के माध्यम से प्रतिभागियों को भेजा गया। ऑनलाइन प्रतियोगिताओं में भाग लेने संबंधी अनुदेशों का व्यापक प्रचार किया गया। गूगल फॉर्म्स, ई–मेल व वाट्सएप के माध्यम से प्रेषित प्रश्न–पत्र सभी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा अपनी सुविधानुसार किसी भी स्थान से सामाजिक दूरी को बनाए रखते हुए हल किए गए। गूगल फॉर्म्स के माध्यम से आयोजित प्रतियोगिताओं का सबमिट बटन दबाने के साथ ही प्रतिभागियों को अपने प्राप्त अंकों का पता चल गया था तथा इन प्रतियोगिताओं के परिणाम भी उसी समय वाट्स एप समूह में जारी कर दिए गए थे। इस बार प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों की संख्या काफी अच्छी रही। विजेता प्रतिभागियों की सूची निम्नानुसार है :–

हिंदी निबंध प्रतियोगिता दिनांक 06.09.2021		
क्र.सं.	**नाम व पदनाम (श्री/सुश्री)**	**पुरस्कार**
1.	चंद्रभूषण, सहायक निदेशक	प्रथम पुरस्कार
2.	अमित बहादुर, सहायक	द्वितीय पुरस्कार
3.	मनीषा, सहायक	तृतीय पुरस्कार
4.	वेद प्रकाश, फार्मासिस्ट	प्रोत्साहन पुरस्कार–1
5.	शिव कुमार, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन पुरस्कार–2

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता दिनांक 07.09.2021		
क्र.सं.	**नाम व पदनाम (श्री/सुश्री)**	**पुरस्कार**
1.	प्रवीण कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम पुरस्कार
2.	सुनील कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार
3.	संदीप कुमार श्रीवास्तव, शाखा प्रबंधक, चंडीगढ़	तृतीय पुरस्कार
4.	पुनीत अरोड़ा, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार–1
5.	अमित बहादुर, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार–2

राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता दिनांक 08.09.2021		
क्र.सं.	**नाम व पदनाम (श्री/सुश्री)**	**पुरस्कार**
1.	कृतिका शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम पुरस्कार
2.	प्रवीण कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार
3.	वेद प्रकाश, फार्मासिस्ट	तृतीय पुरस्कार
4.	संदीप पांचाल, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार–1
5.	दिवांशी वर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार–2

हिंदी वाक् प्रतियोगिता दिनांक 09.09.2021		
क्र.सं.	**नाम व पदनाम (श्री/सुश्री)**	**पुरस्कार**
1.	अमित बहादुर, सहायक	प्रथम पुरस्कार
2.	संजय कुमार दास, अधीक्षक	द्वितीय पुरस्कार
3.	प्रवीण कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार
4.	चंद्रभूषण, सहायक निदेशक	प्रोत्साहन पुरस्कार–1
5.	रजनीश चौधरी, उप निदेशक	प्रोत्साहन पुरस्कार–2

हिंदी दिवस समारोह की रिपोर्ट

क्षेत्रीय निदेशक श्री अमरीश कुमार शर्मा की अध्यक्षता में दिनांक 14.09.2021 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के मनोरंजन क्लब में सामाजिक दूरी संबंधी नियमों तथा मानक संचालन प्रक्रिया संबंधी अनुदेशों का पालन करते हुए एक सादे समारोह का आयोजन किया गया। समारोह स्थल पर केवल पुरस्कार विजेताओं, अधिकारियों व सीमित संख्या में श्रोताओं को ही आमंत्रित किया गया था। हिंदी दिवस समारोह का लाइव ऑनलाइन प्रसारण किया गया तथा क्षेत्रीय कार्यालय की सभी शाखाओं तथा अधीनस्थ शाखा कार्यालयों/औषधालयों–सह–शाखा कार्यालयों को माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से जोड़ा गया। समारोह का शुभारंभ पंचदीप प्रज्जवलन से हुआ। क्षेत्रीय निदेशक श्री अमरीश कुमार शर्मा तथा अन्य अधिकारियों द्वारा पंचदीप प्रज्जवलित किया गया। इसके उपरांत सुश्री तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, सुश्री साक्षी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक, सुश्री सुमन शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक तथा सुश्री खुशबू बत्ता, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा सरस्वती वंदना 'हे शारदे माँ' प्रस्तुत की गई। तत्पश्चात् श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (रा.भा.) द्वारा अध्यक्ष महोदय का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया।

मंच संचालन करते हुए सुश्री कृष्णा कुमारी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने समारोह का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् श्री अश्वनी कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने वर्ष के दौरान संचालित राजभाषा संबंधी विभिन्न क्रियाकलापों तथा क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में वर्ष 2020–21 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति व उपलब्धियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। तत्पश्चात् क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी का संदेश पढ़कर सुनाया गया जिसे सभी ने ध्यानपूर्वक संज्ञान में लिया। क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के कर्मचारियों द्वारा इस अवसर पर एक संक्षिप्त सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सुश्री साक्षी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा 'माँ ए नी मेरी ए' हिमाचली लोकगीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् श्री मनसा राम, सहायक द्वारा 'समां है सुहाना–सुहाना' गीत प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम को विराम देते हुए क्षेत्रीय निदेशक द्वारा मुख्यालय से प्राप्त महानिदेशक महोदय द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में जारी अपील को पढ़ा जिसे सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री बीरइंदर सिंह भट्ट, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा पंजाबी गीत प्रस्तुत किया गया उसके पश्चात् श्री अरविंद, सहायक द्वारा 'अहसान मेरे दिल पे तुम्हारा है दोस्तों' गीत गाया गया। तत्पश्चात् श्री विवेक कौशल, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा स्वरचित पंजाबी गीत प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंत में सुश्री कृतिका शर्मा व सुश्री वर्तिका पाण्डेय द्वारा पुराने फिल्मी गीतों पर आधारित एक गीतमाला प्रस्तुत की गई जिसने सभी का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के अगले चरण में हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए तथा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने पर इस बार अंतर्शाखायी राजभाषा चल शील्ड वित्त एवं लेखा शाखा–1 को प्रदान की गई जिसे श्री सुशील सचदेवा, उप निदेशक (वित्त) तथा शाखा के अन्य कार्मिकों ने ग्रहण किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रतिभागियों को भी शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी गई।

तत्पश्चात् श्री दिनेश सिंह, सचिव एसिक कर्मचारी संघ, पंजाब तथा श्री रजनीश चौधरी, सचिव, एसिक अधिकारी संघ, पंजाब ने अपने विचार रखे। उन्होंने कोविड–19 महामारी के कारण उत्पन्न विकट परिस्थितियों में भी राजभाषा पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं तथा हिंदी दिवस के ऑनलाइन सफल आयोजन के लिए राजभाषा शाखा की उनके अथक प्रयासों के लिए सराहना की।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी 'राजभाषा प्रतिज्ञा' दिलवाई गई। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपने–अपने स्थान पर खड़े होकर प्रतिज्ञा ली। तत्पश्चात् क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा सांविधिक दायित्व ही नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी भी है। हमें कार्यालयीन कार्य को हिंदी में ही शत–प्रतिशत निष्पादित करने के प्रयास करने चाहिएं। हिंदी भाषा पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि सरल तथा सहज हिंदी का प्रयोग हमें हमारे कार्यालयीन कामकाज में करना चाहिए अर्थात् जो हम सहज भाव से सोचते हैं उन्हीं विचारों को हमें सहज भाव में ही लिखना चाहिए। कुछेक अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को अगर हमें किसी कारणवश लिखना पड़ता है तो हमें उन शब्दों को अंग्रेजी में न लिखकर उनका देवनागरी लिपि में लिप्यांतरण कर उन्हें हिंदी में लिख देना चाहिए। उन्होंने हिंदी भाषा की वर्तनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी भाषा के अपने सिद्धांत हैं जिसमें शब्द का जैसा उच्चारण होता है, वैसा ही उसे लिखा जाता है। उन्होंने विकसित देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि सभी विकसित राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष हमेशा ही वैश्विक मंच पर अपनी ही भाषा में अपने विचार रखते हैं। इससे सिद्ध होता है कि किसी भी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास उसकी ही भाषा में संभव है। उन्होंने बल दिया कि हमें अपनी राजभाषा का सम्मान करना चाहिए तथा उसे बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में राजभाषा शाखा के कार्मिकों के समर्पण एवं सतत् प्रयासों की सराहना की। उन्होंने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से पुनः आग्रह किया कि वे अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में ही करें व अपने स्तर पर राजभाषा संबंधी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करें।

तत्पश्चात् श्री सुशील सचदेवा, उप निदेशक(वित्त) ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस के सफल आयोजन के लिए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग की सराहना की। उन्होंने महामारी के इस दौर में प्रतियोगिताओं के सफल संचालन के लिए राजभाषा शाखा एवं आई.सी.टी. शाखा के सक्रिय सहयोग की सराहना की। सामान्य शाखा का भी उनके सक्रिय सहयोग के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया तथा इस कार्यक्रम के आयोजन से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों के सहयोग की भी सराहना की। कार्यक्रम के अंत में अल्पाहार वितरण के पश्चात् राष्ट्रगान के पश्चात् समारोह का समापन किया गया।

हिंदी दिवस समारोह झलकियां

हिंदी दिवस समारोह झलकियां

हिंदी दिवस समारोह झलकियां

हिंदी भाषा का महत्व

हितेश कौशिक कक्षा 8वीं
सुपुत्र श्री अश्वनी कुमार,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

एक स्वतंत्र देश की खुद की एक भाषा होती है, जो उस देश का मान–सम्मान और गौरव होती है। भाषा और संस्कृति ही उस देश की असली पहचान होती है। भाषा ही एक ऐसा माध्यम है, जिसकी मदद से हम अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं। विश्व में कई सारी भाषाएँ बोली जाती है, जिसमें हिंदी भाषा का विशेष महत्व है। यह भाषा भारत में सबसे अधिक बोली जाती है। यह सभी राज्यों के बहुभाषी लोगों को एक–दूसरे से आपस में जोड़े रखने का काम भी करती है। हिंदी सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में बोली जाने वाली भाषा है। इसका अध्ययन विदेशों में भी होता है और विश्व के कोने–कोने से लोग भारत में सिर्फ हिंदी सीखने के लिए आते हैं। ऐसा माना जाता है कि हिंदी भाषा का जन्म लगभग एक हजार वर्ष पहले हुआ था। हिंदी का जन्म देवभाषा संस्कृत की कोख से हुआ है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, हिन्दी –यह हिंदी भाषा का विकास क्रम रहा है। इसकी लिपि देवनागरी लिपि है। हिंदी एक भावात्मक भाषा है, जो लोगों के दिलों को आसानी से छू लेती है। हिंदी भाषा देश की एकता का सूत्र है। पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने का श्रेय एक मात्र हिंदी भाषा को जाता है। साहित्य की गरिमा हिंदी भाषा जन–आंदोलनों की भाषा भी रही है।

भारत की अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण इलाकों में रहती है। ऐसे में बहुभाषा–भाषी देश में सम्पर्क भाषा का विशेष महत्व है। अनेकता में एकता हमारी अनुपम परम्परा रही है। वास्तव में सांस्कृतिक दृष्टि से सारा भारत सदैव एक ही रहा है। हमारे इस विशाल देश में जहाँ अलग–अलग राज्यों में भिन्न–भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं और जहाँ लोगों के रीति–रीवाजों, खान–पान, पहनावे और रहन–सहन तक में भिन्नता हो, वहाँ सम्पर्क भाषा ही एक ऐसी कड़ी है जो एक छोर से दूसरे छोर के लोगों को जोड़ने और उन्हें एक दूसरे के समीप लाने का काम करती है। भारत में हर व्यक्ति अन्य भाषाओं को मुख्य भाषा के रूप में प्रयोग में नहीं ला सकता लेकिन हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसकी मदद से हर भारतीय आसानी से आपस में समझ सकते हैं। हिंदी बहुत ही सरल भाषा है, जिससे हर कोई सीखकर इसका प्रयोग कर सकता है। यह सीखने में बहुत ही आसान है।

इंटरनेट एक ऐसी जगह है, जहाँ पर हम हर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत और विश्व में इन्टरनेट जिस गति से विकसित हुआ है, यह वास्तव में प्रशंसनीय है। हिंदी भाषा भी अब इंटरनेट पर तेजी से अपना कब्जा जमा रही है। आज के समय में हिंदी भाषा हर समाचार पत्र से लेकर हिंदी ब्लॉग तक अपनी पहचान हासिल कर रही है।

गूगल और विकिपीडिया जैसी बड़ी वेबसाइटें भी हिंदी को हर व्यक्ति तक पहुँचाने में अपनी हर संभव कोशिश कर रही हैं। इन्होंने हिंदी भाषा के महत्व को समझते हुए इंटरनेट पर ट्रांस्लेटर, सर्च इंजन सॉफ्टवेयर

आदि को विकसित किया जिससे लोगों के लिए हिंदी को जानना और भी आसान हो गया। आज के समय में इंटरनेट पर हर महत्वपूर्ण चीज की जानकारी हिंदी में मिल रही है, जिससे हिंदी और भी लोकप्रिय होती जा रही है।

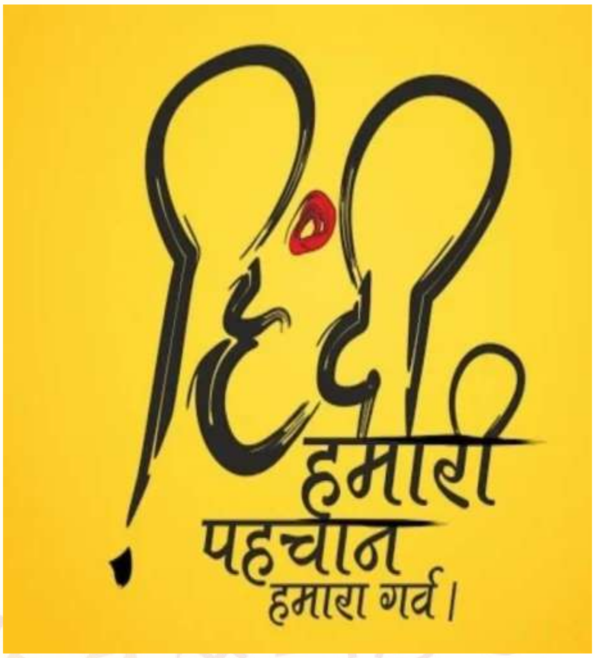

ऐसा माना जाता था कि हिंदी उत्तर भारत में ज्यादा बोली जाती है लेकिन अब हिंदी भारत के हर कोने में फैल गई है और धीरे–धीरे हिंदी भाषा पूरे भारत में लोकप्रिय भी हो गई। आज के समय में हिंदी भाषा वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है।

भारत के अलावा नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, अमेरिका, यमन, युगांडा, जर्मनी, न्यूजीलैंड, सिंगापुर आदि में भी हिंदी बोलने वालों की संख्या लाखों में है। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया, यूके, कनाडा और यूएई में भी हिंदी बोलने वालों की संख्या भी बहुत है।

वर्तमान युग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का युग है एवं कोई भाषा इनमें अपना स्थान बनाए बिना महत्वपूर्ण नहीं हो सकती। भाषा का महत्व बहुत कुछ उसे बोलने वाले देश के आर्थिक एवं सामरिक महत्व पर भी निर्भर करता है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्कों, सेवाओं, एवं वाणिज्य में हिंदी का प्रयोग बहुत ही सराहनीय रहा है। भारत जनसंख्या के हिसाब से विश्व में एक बहुत बड़े बाजार की भूमिका भी निभा रहा है। ऐसे में सभी देशों को भारत से व्यापारिक संबंध बनाए रखना उनकी मजबूरी है और व्यापार लोगों की स्थानीय भाषा में ही संभव है। ऐसे में उन देशों के लिए भी हिंदी का प्रयोग अपने विज्ञापनों आदि में या अपने उत्पादों के लेबलों पर करना अनिवार्य हो जाता है। ऐसे में हिंदी के अंतरराष्ट्रीय महत्व को नकारा नहीं जा सकता। यही बात अंतर राज्य व्यापार पर भी लागू होती है।

हिंदी भाषा की विशेषताएं

- इस भाषा को देवभाषा संस्कृत का सरलतम रूप कहा जाता है।
- हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जिसमें हम दूसरी भाषा के शब्द भी आसानी से प्रयोग कर सकते है, जिससे हमें आसानी होती है।
- इस भाषा की वर्णमाला में स्वर और व्यंजन दूसरी भाषाओं की वर्णमालाओं की तुलना में बहुत अधिक व्यवस्थित हैं।
- यह एक ऐसी भाषा है, जिसमें निर्जीव वस्तुओं के लिए लिंग का निर्धारण होता है।
- हिंदी भाषा को पढ़ने के साथ ही इसे आसानी से लिखा भी जा सकता है।
- हिंदी भाषा के शब्दकोश में मौजूद शब्द हर काम के लिए अलग–अलग है और ये शब्द सतत् बढ़ रहे हैं।
- इस भाषा में साइलेंट लेटर्स नहीं होते हैं, जिसके कारण इसका उच्चारण और लेखन में शुद्धता होती है।
- सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है इसलिए सभी बड़ी–बड़ी सोशल मीडिया वेबसाइटों ने हिंदी को महत्व देना शुरू कर दिया है।

हिंदी भाषा के प्रति हम सभी का यह कर्तव्य है कि हमें हिंदी के विस्तार के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। हमें इसका भरपूर सम्मान करना चाहिए। यह भाषा सभी धर्मों को जोड़े रखने का काम करती है। सभी को यह समझाना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग करना हीनता का प्रतीक नहीं बल्कि यह हमारा गौरव है।

कहानी परिचय

सच्चाई हो या किसी ने बनाई हो, माँ ने कही हो या नानी ने सुनाई हो,
अच्छी लगती है, वो कल्पना अनजानी बार-बार रात को बचपन भरा दिल कहता है,
माँ कह एक कहानी ....

मानव जीवन में कहानी उसके जीवन के साथ-साथ चलती है। सुख-दु:ख, राजा-रानी, परियां, जादू-टोना, भूत-प्रेत, राक्षस-चुड़ैल, उलझनें-तनाव, रहस्य, हास्य-सब जगह कहानी घर बसा लेती है। कहानी की इस विशाल परम्परा में हमारे निगम के कर्मचारियों ने भी कुछ कहानियाँ रची हैं। आइए देखें इनकी बनावट और बुनावट को.....

ईमानदारी का फल

नेहा भारद्वाज
प्रवर श्रेणी लिपिक

ईमानदारी का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। ईमानदारी के बल पर हम अपने व्यक्तित्व में चमत्कारिक परिवर्तन ला सकते हैं। ईमानदार व्यक्ति सर्वत्र सम्मानित होता है। बहुत पुरानी बात है। एक नगर में अकाल पड़ा था। लोग भूख से मरने लगे थे। वहाँ एक दयालु धनाढ्य व्यक्ति रहते थे। उन्होंने निर्णय लिया कि वह नगर के सभी छोटे बच्चों को प्रतिदिन एक रोटी देंगे। इस घोषणा को सुनते ही सभी बच्चे इक्ट्ठा होने लगे। बच्चों को रोटियां बँटने लगीं। रोटियों का आकार छोटा–बड़ा था। बच्चे एक–दूसरे को धक्का देकर बड़ी रोटी पाने का प्रयत्न कर रहे थे। वहीं एक छोटी लड़की चुपचाप कोने में खड़ी थी। वह सबसे अंत में आगे बढ़ी। अंतिम बची रोटी प्रसन्नता से लेकर वह घर चली गई। दूसरे दिन भी लड़की को छोटी ही रोटी मिली। लड़की ने जब घर लौटकर रोटी तोड़ी तो रोटी में से सोने का एक सिक्का निकला। उसकी माता ने कहा कि यह सिक्का उस धनी व्यक्ति को दे आओ। लड़की दौड़ी–दौड़ी धनी व्यक्ति के घर गई। उस व्यक्ति ने पूछा कि तुम यहाँ क्यों आई हो ? लड़की ने कहा, ''मेरी रोटी में यह सिक्का निकला है। शायद यह आटे में गिर गया होगा। यह सिक्का मैं आपको देने आई हूँ।'' वास्तव में धनी व्यक्ति ने बच्चों की परीक्षा लेने के लिए जान–बूझकर यह उपक्रम किया था।

यह सुनकर धनी व्यक्ति बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे अपनी धर्मपुत्री बना लिया। कालांतर में वही उसकी उत्तराधिकारी बनी। यह उस लड़की के लिए ईमानदारी का फल था। ईमानदार व्यक्ति को भले ही वर्तमान दौर में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़े, परंतु ईमानदारी के पथ पर चलने से उसका मन सदैव प्रसन्न रहता है। धीरे–धीरे उसकी यश और कीर्ति भी बढ़ने लगती है। ईमानदारी वह विशिष्ट आभूषण है जिसे धारण करने वाला सदैव उन्नति के पथ पर बढ़ता चला जाता है। इसीलिए हमें ईमानदारी के पथ पर चलते हुए जीवनयापन करना चाहिए, जिससे हम समाज में एक आदर्श स्थापित कर सकें।

एकाग्रता

कृतिका शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

एकाग्रता मामूली प्रयासों से संभव नहीं हो पाती, बल्कि यह तभी विकसित होती है जब किसी कार्य को बोधपूर्ण ढंग से किया जाता है तथा उसके पूर्ण होने पर आंनद की प्रबल अनुभूति होने लगती है। कार्य के संपादन में अनुभव हो रही यही आनंद की सुखद अनुभूति कार्य के प्रति एकाग्र करने में भी सहायक होती है। वास्तव में एकाग्रता एक ऐसी शक्ति है, जो व्यक्ति को उसकी आंतरिक शक्ति से जोड़ती है। इसी कारण एकाग्रता की स्थिति में जब कोई कार्य किया जा रहा होता है तो उसमें स्वयं आनंद आने लगता है। लोगों को अपने बचपन के दिन अवश्य याद होंगे। जब एक बच्चा केवल उस समय आनंद से सराबोर रहता है जब वह अनावश्यक रूप से दौड़ते हुए एक तितली को पकड़ने में लगा रहता है। ऐसी स्थिति में यह बच्चा एकाग्र भाव में जाकर अपने कार्य को संपन्न करता है।

एकाग्रता का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि हम चुपचाप खाली बैठ जाएं और अपने आप को विचारों से मुक्त कर लें या कुछ न करें। एकाग्रता का तात्पर्य एकाग्र होकर कार्य को संपन्न करने से है, जो उस कार्य के प्रति रुचि को उत्पन्न करता है। जब कार्य के प्रति रुचि उत्पन्न होती है तो ऐसा कार्य न केवल आसानी से संपन्न हो जाता है, बल्कि उसे संपन्न करते समय और संपन्न होने के उपरांत दोनों ही स्थितियों में अभूतपूर्व आनंद की अनुभूति होती है। हम जीवन में जब–जब जिस प्रकार के आनंद की अनुभूति करते हैं वह आनंद हमारे ह्रदय में समा जाता है और छोटे–छोटे टुकड़ों के समान ह्रदय की गहराइयों में इधर–उधर पड़ा रहता है। वास्तव में एकाग्रता एक ऐसी शक्ति होती है, जो ह्रदय में पड़े हुए आनंद के पुराने टुकड़ों को आपस में जोड़ देती है। इसी से एकाग्रता के वास्तविक क्षणों में सुखद अनुभूति होती है।

सार्थक जीवन का सूत्र

सुनीता
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

जिंदगी भर हम कुछ न कुछ खरीदते रहते हैं। हम सोचते हैं कि ये चीजें हमें शारीरिक और मानसिक सुख प्रदान करेंगी। असलियत में हमें क्या खरीदना चाहिए। यह हमें मालूम नहीं होता है। दुनिया में बहुत कुछ मिल रहा है। हमें समझ नहीं कि हम क्या खरीदें और उसका हम पर क्या असर होगा? जैसे कि जो चीज हमारी सेहत के लिए अच्छी है तो हम उसे खाएंगे और अगर खराब हो तो हम उसे नहीं खाएंगे। यही बातें हमारी जिंदगी के आध्यात्मिक पहलू पर भी लागू होती हैं।

हमें अपना समय सही चीजों को पाने में लगाना चाहिए। हर एक के लिए दिन में सिर्फ चौबीस घंटे हैं। उसका इस्तेमाल अगर सही तरीके से करेंगे तो हम अपनी मंजिल की ओर तेजी से बढ़ेंगे। महापुरुषों के चरण–कमलों में लोग दूर–दूर से इसलिए आते हैं, क्योंकि वे उन्हें आध्यात्मिक जागृति देते हैं। यदि महापुरुषों के चरणों में पहुँचकर भी हमने उनसे पैसे और दुनिया की अन्य चीजें मांग ली, फिर तो हमने अपने असली रूप के लिए कुछ मांगा ही नहीं और न ही अपनी आध्यात्मिक उन्नति की ओर कदम बढ़ाए। हमारी जिंदगी बड़ी अनमोल है, लेकिन अगर हमने इसको बाहरी दुनिया के सुखों में ही व्यतीत कर दिया तो हम असलियत से बहुत दूर हो जाएंगे।

सत्‌गुरु एक शिक्षक की तरह हमें आत्म–ज्ञान देकर ध्यान की विधि सिखाते हैं। जैसे–जैसे हम ध्यान–अभ्यास करते हैं तो हम अपने अंतस से प्रभु की दिव्य ज्योति से जुड़कर सदा–सदा की खुशी को प्राप्त करते हैं। इसीलिए हम अपना अधिक से अधिक समय ध्यान–अभ्यास में लगाएं। साथ ही साथ हम अपने जीवन में सद्‌गुणों को भी धारण करें। हम औरों के मददगार हों, सभी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें, किसी का दिल न दुखाएं और नम्रतापूर्वक जीते हुए अपने जीवन के असली उद्देश्य को इसी जीवन में पूरा करें, जोकि अपने आपको जानना और पिता–परमेश्वर को पाना है। तभी इस जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है।

वर्ष 1935 से मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री सी. राजगोपालाचारी ने हिन्दी शिक्षा को अनिवार्य किया।

देशप्रेम और राष्ट्रनिर्माण

मोनिका खुल्लर
प्रवर श्रेणी लिपिक

मैं उस देश की नागरिक हूँ, जहाँ छत्रपति शिवाजी महाराज और सम्राट अशोक जैसा राजा था।
मैं उस देश की नागरिक हूँ, जहाँ हर 50 मील पर लोगों का पहनावा, मजहब बदल जाता था।
मैं उस देश की नागरिक हूँ, जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़िया को पाया जाता था।
मैं उस देश की नागरिक हूँ, जिसे अपने भूगोल से पहले इस ब्रह्मांड का भूगोल समझ आता था।

आज़ादी का असली मतलब वही समझ सकता है जिसने कभी गुलामी देखी हो। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमने स्वतंत्र भारत में जन्म लिया। यूं तो आज़ादी की लौ 1857 में ही जल चुकी थी, जिसने मशाल बन कर 1947 में हमारे देश को आज़ाद कराया। प्राचीन, मध्यकालीन और वर्तमान भारत के उदाहरणों से स्पष्ट करना चाहूंगी कि जब हम फिरंगियों के घेरे में फँस गए थे तो **'रंग दे बसंती चोला'** की एक आवाज़ पर टोले के टोले उमड़ आते थे और उनके **'वन्दे मातरम्'** के नारों से खून में आने वाला 5–5 डिग्री का तूफान अंग्रेजी शासकों की जड़ों को कमज़ोर करता था। लोग मर जाते थे, मिट जाते थे ताकि अपनी देशभक्ति साबित कर सकें। उसके बाद 1962, 1965 और 1971 के युद्धों में अपना सुहाग गंवा देने वाली औरत के घर के हालत क्या होते थे इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। किसी कवि ने खूब वर्णन किया है:–

घर का प्यार भी गया, मांग का सिंदूर भी गया।
नन्हें नौनिहालों की लंगोटियाँ चलीं गई, छोटी–छोटी
बेटियों की चोटियाँ चली गई।
बाप की कमाई गई, भाई की पढ़ाई गई।
ऐसा एक विस्फोट हुआ कि, जिस्मों की बोटियाँ चलीं गई।

ऐसे हालात में भी एक माँ अपने बेटे को सरहद की रक्षा करने भेज देती थी और उसे पत्र लिखा करती थी कि

अम्मा ने खत लिखा है बड़े चावों से
"पुत्र मेरे ना घबरा जाना, चाहे इंच–इंच कट जाना"

तब देश बलिदान मांगता था, मर जाने, मिट जाने, फाँसी चढ़ जाने को कहते थे, किन्तु आज देश केवल अपने कर्मस्थल पर ईमानदारी और सच्चाई मांगता है। फेसबुक और वाट्सएप पर अपनी डीपी को तीन रंगों में रंग देना देशभक्ति नहीं है। अपने परिवार, अपने देश के लिए समर्पण का भाव देशभक्ति है। ऐसी भावना जो हर देशद्रोही के मन में तूफान खड़ा करने का साहस रखती हो ताकि हर देशद्रोही यह समझ सके कि अगर वो परिंदा है तो यह आसमान उस देशप्रेमी का है। भाईचारे और प्रेम से अगर नहीं रह सकते तो कब्र और कब्रिस्तान तेरा है। लेकिन एक देशद्रोही से भी बड़ी चोट वो देशभक्त भारत माँ को देता है जो अपने बूढ़े माँ–बाप को वृद्धाश्रम छोड़ आता है। मुसीबत के समय लोगों की जान बचाने से पहले सेल्फी लेकर उसे अपलोड करने में वक्त ज़ाया करता है। वो युवा जिनके ऊपर जिम्मेदारी थी अपने देश, अपने समाज, अपने राष्ट्र की आशाओं को बाँधे रखने की, वही युवा अब 4X4 की एक छोटी सी स्क्रीन पर अपनी उंगलियों के स्पर्श मात्र से अपनी भावनाओं की इमोजी भेज रहा है।

चार बॉटल वोडका, काम मेरा रोज़ का

ऐसे कथनों ने हमारे देश का भविष्य बर्बाद कर रखा है। हम एक ऐसे दोगले समाज में रहते हैं जहाँ भाई अपनी बहनों को लड़कों से बात करते देखे तो उनको हड़काते हैं किन्तु खुद अपनी गर्लफ्रेंड के किस्से घर में हँस–हँस कर सुनाते हैं। महिला सुरक्षा के मामले में हम आज भी पीछे हैं। हम एक ऐसे समाज में जीते हैं जहाँ पत्थर की मूरत को तो छप्पन भोग लगते हैं पर गरीब लोग बेचारे सड़कों पर नंगे, भूखे–प्यासे सोते हैं। मजबूर और गरीब लोगों को बेचारा समझकर दान नहीं काम दीजिए। बीमार लोगों को देखकर केवल अफसोस ना करें अपितु जीते जी रक्तदान एवं मरणोपरांत नेत्र दान करने का प्रण लें। यही सच्ची देशभक्ति और राष्ट्र प्रेम है।

हम अपनी जान के दुश्मन को अपनी जान कहते हैं,
मोहब्बत की इसी मिट्टी को हिंदुस्तान कहते हैं।
जो दुनिया में दिखाई दे उसे कहते हैं खामोशी
जो आँखों में दिखाई दे उसे तूफान कहते हैं।

यह हमारा देश जिसने पूरी दुनिया को तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय देकर विश्व भर में शिक्षा की बुनियाद रखी, आज 100 सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में हमारा एक भी विश्वविद्यालय खड़ा नहीं हो पाता। ऐसा इसलिए क्योंकि हमारे देश की शिक्षा नीति दो वर्गों के लिए बनती है, एक वो जो विद्वान हैं और दूसरे वो जो धनवान हैं। इस देश में एक और बीमारी है–अंधविश्वास की। आज का युवा मेहनत करके तरक्की करने की बजाए मंदिरों में जाकर नारियल चढ़ाकर वरदान स्वरूप सब कुछ हासिल करना चाहता है। हमारे समाज का शिक्षित वर्ग भी बिल्ली के रास्ता काट जाने पर वहीं खड़ा हो जाता है और यात्रा टाल देता है ताकि कुछ अनहोनी ना हो जाए। हम अपने धर्म और जाति को तो ऊँचा मानते हैं पर दूसरे धर्मों की निंदा करते हैं। तभी यहाँ ना तो आज तक अन्ध विश्वास खत्म हुआ और ना ही ढंग से विकास हुआ।

सरकार हम सबकी है, सब भारत वासियों की। इसलिए धर्म, मजहब के नाम पर की जाने वाली राजनीति का कोई मोल नहीं। हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं जहाँ हिन्दु, सिख, मुस्लिम और ईसाई सभी पैदा होते हैं। किन्तु बदकिस्मती यह है कि यहाँ इंसान पैदा नहीं होते।

ना हिंदू की ज़रूरत है, ना मुसलमान की ज़रूरत है।
राष्ट्र निर्माण के लिए केवल अच्छे इंसान की ज़रूरत है।।

मेरे विचारों में हमारा राष्ट्र निर्माण तभी संभव होगा जब इस देश में महिलाओं की पूजा नहीं बल्कि इज्ज़त की जाएगी, जब हम जातिवाद की नहीं सामाजिक सशक्तीकरण की बात करेंगे। जब स्वच्छता अभियान केवल सरकार का नहीं होगा बल्कि रास्ते पर चलने वाला हर नागरिक "स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत" को दिल से अपनाएगा। हमें सेल्यूट करना चाहिए सरहद पर तैनात हमारी रक्षा के लिए खड़े हर जवान को, इस देश की पुलिस, प्रशासन और किसान को और हर उस व्यक्ति को जो अपना काम पूरी ईमानदारी, पूरी मेहनत और लगन से करते हैं। इन सब के बिना राष्ट्र निर्माण की कल्पना करना भी असंभव है। हमारा राष्ट्र निर्माण तब संभव होगा जब हम सब मिलकर अपने देश के प्रति अपनी हर ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाएंगे।

मेरा हिंदुस्तान महान था, महान है, महान रहेगा
होगा होंसला सबके दिलों में बुलंद तो, एक दिन यह सारा जहाँ "जय हिन्द" कहेगा ।

अहंकारी मनुष्य

निपेन्द्र सिंह कटकवाल
सहायक

इस भौतिक जगत में भोग प्रकृति के कारण प्रत्येक जीव में अशान्ति का वातावरण है। क्या निर्धन, क्या धनी सभी अशांत एवं दुःखी है। संसार के इन उपयोगी साधनों से दूर होना संभव नहीं है क्योंकि ज्ञान के अभाव में हर जीव राग–द्वेष से ग्रसित मोह–माया के महान तिमिर में भटक रहा है। जब तक इसे शुद्ध आत्मज्ञान का प्रकाश नहीं मिलेगा तब तक यह भ्रम सन्देह में खोया हुआ यूँ ही भकटता रहेगा। इस प्रकार इसे कभी भी शांति कैसे प्राप्त हो सकती है। यह पावन अलौकिक आत्मज्ञान तो केवल सच्चे जिज्ञासुओं को गुरू की शरण में जाकर निष्काम सेवा करते हुए उनके उपदेश–प्रवचन को जीवन में ग्रहण कर अनुकरण करने से ही प्राप्त होता है। आत्म ज्ञान को प्रदान करने वाले गुरू का स्थान संसार में सर्वोच्च–सर्वोपरि है। गुरू ज्ञान दीक्षा में जीवन सफल है। मनुष्य जब संसार में पैदा होता है तब किसी जाति–धर्म में नहीं होता है। मनुष्य पैदा होते ही अंहकार में रहता है कि बड़ा हूँ। मेरे पास बड़ा मकान जमीन–जायदाद है। हम सभी परमात्मा की संतान हैं। सभी को एक दिन मिट्टी में मिल जाना है। ऐसे मिल जाना है जैसे कि आटे में नमक। पता नहीं चलेगा बड़ा कौन है, छोटा कौन है। फिर भी इंसान अंहकार में रहता है। बिना गुरू ज्ञान की उत्पति नहीं होती, बिना गुरू मुक्ति नहीं होती है। इस संसार में सद्गुरू के समान कोई नहीं है। काल के आने में देर नहीं, वह किसी क्षण आ सकता है। किसी का बुरा मत करो। कबीर साहब जी कहते है कि तन मन धन का अंहकार मत करो, काल तुम्हारी चोटी को पकड़कर रखे हुए है। न जाने वह कहाँ कब मारे डाले। उसके लिए किसी घर, देश या विदेश की कोई दूरी नहीं है। प्रत्येक स्थान पर आकर मार डालेगा। जिस प्रकार होज का पानी नाली से निकलते हुए धीरे–धीरे समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार एक दिन जब काल आएगा तो शरीर के छिद्रों से जीवन निकल जाएगा। इस प्रकार मनुष्य को अपनी हद में रहना चाहिए। जैसे हम नहाने के बाद कपड़े बदलते हैं, उसी प्रकार हमारा शरीर दूसरा शरीर बदलता है। गंगा–यमुना या किसी भी तीर्थ आदि में नहाने–धोने से मन का मैल नहीं जाता। इंसान के मन में मैल भरा हुआ है। गंगा–यमुना में नहाने से कोई फायदा नहीं है। इंसान को सभी को एक समान मानना चाहिए। मनुष्य अज्ञानी तू इतनी लापरवाही से मस्त हुआ क्यों घूमता–फिरता है, मोह–माया की घनघोर रात्रि में तू क्यूँ सोया पड़ा है। क्या तुझे मालूम नहीं कि तेरे सिरहाने काल ऐसे खड़ा है जैसे अन्धेरे में चोर खड़ा है। हर समय मनुष्य को अपनी मृत्यु याद रखनी चाहिए। हमारे साथ मकान–दुकान या माया कुछ नहीं जाएगी, सिर्फ अच्छाई–बुराई ही जाएगी।

कविता
परिचय

आज फिर किसी को रोते देखा .... कविता फूट पड़ी
आज फिर किसी को हँसते देखा .... कविता फूट पड़ी
आज फिर मौसम बदला – मैं कुछ गुनगुना उठा
आज एक बच्चे को मुस्काते देखा – मैं कुछ गा उठा

जीवन में सुख–दु:ख, हँसना–रोना, उत्सव–पर्व,
त्यौहार, प्रकृति सब जगह एक कविता है।
एक कवि हृदय चाहिए जो इसे देख सके,
समझ सके और कह सके, रच सके, गा सके।
जीवन के इस गीत में, प्रेम भरी प्रीत में,
बसंत की सुगन्ध में, होली की उमंग में
हमारे निगम के कर्मियों ने भी कविता की कल्पना को साकार किया है।
आइए देखें कुछ कवि हृदयों को.....

काबुल से एक बच्चा

संदीप पांचाल
अवर श्रेणी लिपिक

ये गोलियां और बंदूक, वाह क्या जीवन मैंने पाया है,
जन्म लिया है जीने को, पर बस मौत की छाया है।

- सोचा था दुनिया में आके, मैं प्यार भरी पुचकार सुनूंगा,
  ये कभी ना चाहता था, कि मैं चीखें और पुकार सुनूंगा,
  घर से बाहर करके हमको, अपनों ने ही आज सताया है।
  जन्म लिया है जीने को...........

- भाग रहे माँ–बाप मेरे हैं, कई दिन और रातों से,
  समझ नहीं आ रहा उनको, कैसे निपटा जाए हालातों से,
  थक के बैठी माँ जब भी, बड़े प्यार से मुझे सहलाया है।
  जन्म लिया है जीने को........

- सबको चाहिए राज यहाँ अपना, थोड़ी–सी ना देर कर,
  झंडा ऊँचा रहेगा उनका यहाँ बस लाशों के ढेर पर,
  करके दोस्ती मुल्कों ने भी, अब हाथ पीछे हटाया है।
  जन्म लिया है जीने को........

- कर दे सवेरा सुकून का, इन रोती बिलखती रातों से,
  लड़ने की ना आए नौबत, मसले सुलझें सब बातों से,
  सब कुछ करदे ठीक मेरे रब्बा, ये कहर जो तूने ढाया है।
  जन्म लिया है जीने को........

- बच गया परिवार जो मेरा, रब्ब का शुक्र मनाउंगा,
  वरना बदला लेने को, फिर मैं भी बंदूक उठाऊंगा,
  काम तो मुश्किल है, सोनू पर वक्त ने बड़ा तड़पाया है।
  जन्म लिया है जीने को........

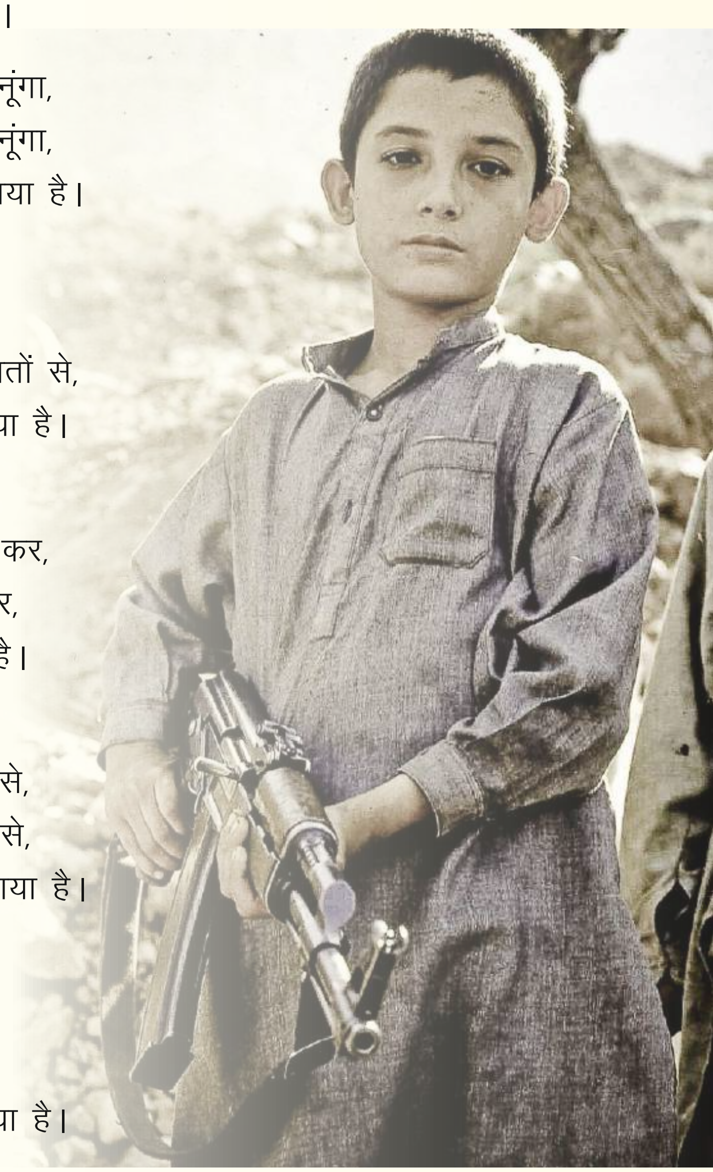

बारिश का अभिसार

वेद प्रकाश
भेषज्ञ

तृप्त धरा की देह से, बारिश का अभिसार,
खुश होकर वो कर रही, नित हरियर श्रृंगार।

कहाँ ग्रीष्म की वो तपन, स्वेद भरा वह दौर,
अब सावन में मन मगन, नाच रहे हैं मोर।

गीत मगन हो गा रहे, धरती के भगवान,
पावस आते खुश हुआ, सबसे अधिक किसान।

बादल धरती से कहे, संचित कर लो नीर,
ग्रीष्मकाल में क्यों रहे, जलाभाव की पीर।

बारिश के जल से किया, जिसने भी स्नान,
देह चमक कर हो गई, सचमुच स्वर्ण समान।

बारिश से हर्षित हुए, सब रीते खलिहान
खेत मगन होने लगे, फसल हुई जवान।

शिवजी को भाये बहुत, अद्भुत श्रावण मास,
कथा बांचती है प्रकृति, होता है अहसास।

बूंद–बूंद संचित करे, यह तो है उपहार,
करे प्रकृति हर कदम पर, हम सब पर उपकार।

जल जीवन का अंग है, जल से ही संसार,
जल न हो तो, जिंदगी हो जाए बेकार।

जहर का स्वाद

अनीश सूद
सहायक

जहर का स्वाद शिव से पूछो ,
मीरा से पूछोगे तो अमृत ही बताएगी।

मोहब्ब्त का अर्थ राधा से पूछो,
रूक्मिणी से पूछोगे तो अधिकार ही बताएगी।

वनवास में विरह का दर्द उर्मिला से पूछो,
सीता से पूछोगे तो धर्म ही बताएगी

और लॉकडाउन का दर्द गरीबो से पूछो,
अमीर से पूछोगे तो मजा ही बताएंगे ।

जिंदगी

कल एक झलक जिंदगी को देखा,
वो राहों पे मेरी गुनगुना रही थी।

फिर ढूंढा उसे इधर–उधर ,
वो आँख–मिचौली कर मुस्कुरा रही थी।

एक अरसे के बाद आया मुझे करार,
वो सहला के मुझे सुला रही थी।

हम दोनों क्यूं खफा हैं एक–दूसरे से,
मैं उसको और वो मुझे समझा रही थी।

मैंने पूछ लिया–क्यूं इतना दर्द दिया कमबख्त तूने,
वो हँसी और बोली मैं जिंदगी हूँ पगले,
तुझे जीना सिखा रही थी।

जीवन

जगदीश चन्द सूर्यवंशी
सहायक

इस जीवन की चादर में सांसों के ताने–बाने हैं,
दु:ख की थोड़ी सलवटें हैं, सुख के कुछ फूल सुहाने हैं,
क्यों सोचें क्या होगा आगे, अब कल के कौन ठिकाने हैं,
ऊपर बैठा वो बाजीगर, जाने क्या मन में ठाने है,
चाहे जितना भी जतन करे, भरने का दामन तारों से,
झोली में वो आएंगे, जो तेरे नाम के ही दाने हैं।

ये जीवन है, इस जीवन का यही है रंग–रूप
थोड़ी खुशियाँ थोड़े गम ये जीवन है ...
ये न सोचो कि इसमें अपनी हार है कि जीत
इसे अपना लो ये ही जीवन की है रीत,
ये जीवन है, इस जीवन का यही है रंग–रूप।

पापा तुम वापस आ जाओ

वर्तिका पाण्डेय
अवर श्रेणी लिपिक

पापा तुम वापस आ जाओ
मुझको फिर से पापा कहना है
तुम्हारी गोद में फिर से सर रख कर सोना है।
मम्मी ने मारा है पापा, ये कहकर खूब रोना है।

इस बार जब तुम आओगे
मैं बात तुम्हारी सारी मानूंगी
तुम जैसा–जैसा बोलोगे, मैं वैसा सब कुछ कर दूंगी

एक बार फिर से हाथ पकडकर मेरा, मुझको चलना सिखा दो ना
पापा मुझको फिर से पापा कहना सिखा दो ना

तुम थक कर जब घर आओगे, मैं दौड़ के पानी लाऊंगी,
पास तुम्हें बिठा कर अपने दिन की सारी बात बताऊंगी।

पापा एक बार आ जाओ कि
अभी तो तुम्हे कितना कुछ बताना है
तुम्हारे ऊंचा सुनने की आदत पर तुम्हें खूब चिढ़ाना है।

पापा तुम्हारे बिना सबकुछ अधूरा लगता है
तुम्हारी कमी भी भला कोई भर सकता है।

मम्मी भी पता नहीं क्यों अब पहले जैसे नहीं हँसती
अपना बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखती

पापा तुम धूप में छांव जैसे थे
मेरे हर डूबते सपनों के लिए नांव जैसे थे

पापा तुमसे ही तो सीखा है बिना हार माने चलते जाना
तुमने ही तो कहा था रास्ता मुश्किल हो फिर भी आगे बढ़ते जाना

पापा तुम वापस आ जाओ कि
मुझे फिर से तुम्हारा साथ चाहिए
अपने सर पर बस तुम्हारा आशीर्वाद चाहिए

मेरे दिल से आपके लिए पापा

यात्रा वृतांत

गगन चूमते पर्वत खड़े प्रहरी से शांत
मनोहर झरने गिर रहे बिना विश्राम
बह रही कहीं सरिता बिना आराम
कहीं बंजर कहीं मधुबन प्रकृति के काम

आज के इस युग में आवागमन के साधनों के चलते धरती सिमट कर रह गई है तथा हमें देश–विदेश में घूमने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है। हर देश में कुछ मानव निर्मित, तो कुछ प्रकृति जनित पर्यटन स्थल हैं जिनको देखना अपने आप में एक सौभाग्य है। जहाँ इन पर्यटन स्थलों की यात्रा हमारे ज्ञान में वृद्धि करती है, वहीं हमें एक–दूसरे की संस्कृति व रहन–सहन की जानकारी भी मिलती है। आइए उन अनुभवों का हम भी लाभ उठाते हैं...

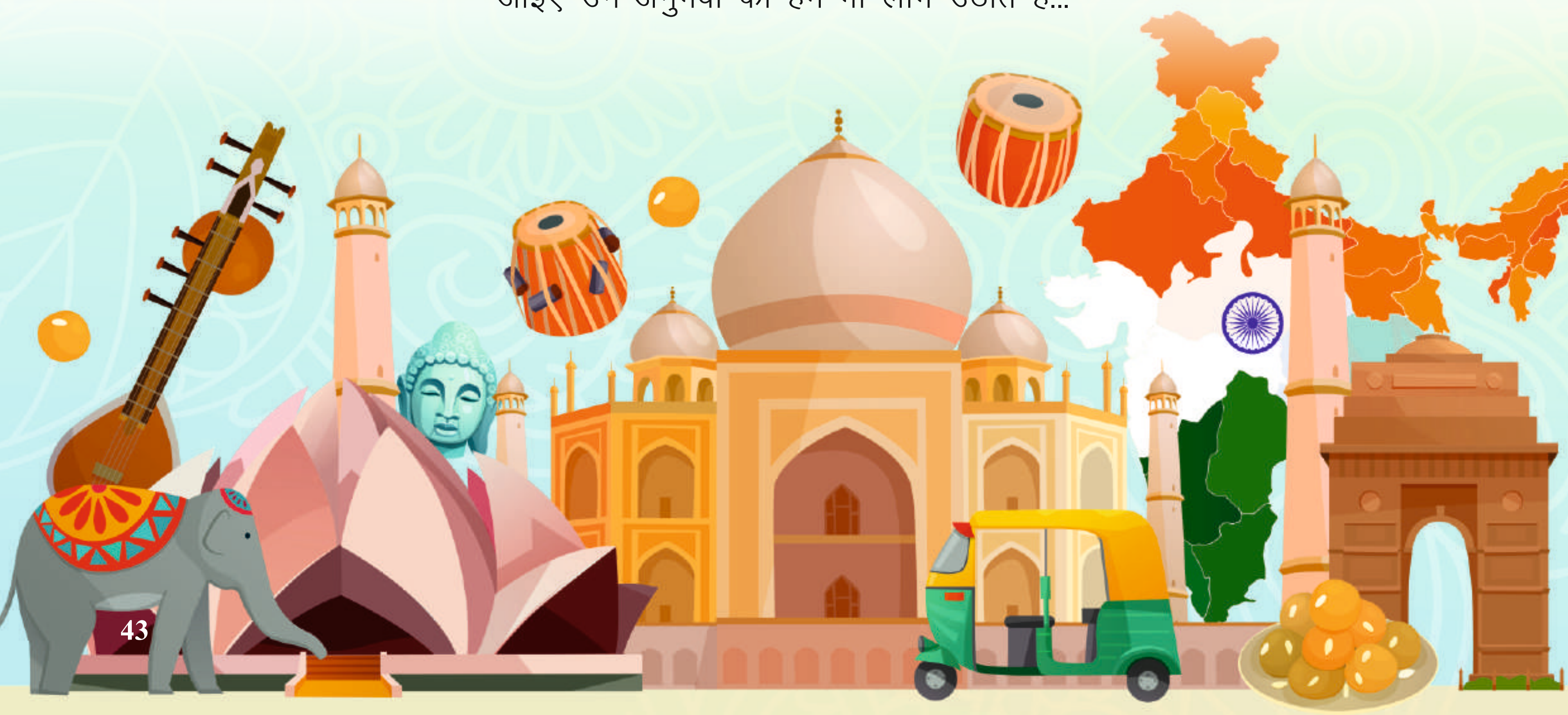

श्री राम तीर्थ मंदिर, अमृतसर

स्वेता जसवाल
अवर श्रेणी लिपिक

पंजाब की पहचान पाँच नदियों की जमीन, इसके पकवानों, इतिहास और संस्कृति से है। चमकदार हरी उर्वर खेती की जमीन, पानी की झिलमिलाहट, वेशभूषा के विभिन्न प्रकार आपको कभी खत्म न होने वाले जीवंत अनुभव का अहसास कराते हैं।

पंजाब की चमत्कारी धरती पर उत्साही, सक्रिय और हमेशा खुश रहने वाले लोग रहते हैं जो आपका खुली बांहों और चेहरे पर मुस्कान से स्वागत करते हैं। पुरुष सतरंगी पगड़ियाँ पहनते हैं, वहीं महिलाएं बहुरंगी परिधान, चूड़ियाँ, रिबन और दुपट्टे पहनती हैं। यहां का संगीत भांगड़ा भी इस रंगबिरंगी और जिंदादिल संस्कृति को और बढ़ा देता है।

राज्य के आकर्षक शहर इसके पर्यटन स्थलों को आपस में जोड़ते हैं। इनमें शामिल हैं– मनमोहक स्मारक, गुरुद्वारे, पवित्र देवस्थल, मंदिर, आश्रम, चौड़ी झीलें, अभयारण्य जो संग्रहालय और प्रवासी पक्षियों की कई दुर्लभ प्रजातियों व जानवरों के घर हैं। पर्यटकों के लिए प्राचीन सभ्यता, समृद्ध संस्कृति, मुँह में पानी ला देने वाले पकवानों और बेहतरीन खरीदारी के लिए यह एक आदर्श पर्यटन स्थल है। इस लेख के माध्यम से हम पंजाब के एक पर्यटन स्थल 'श्री राम तीर्थ मंदिर, अमृतसर के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करते हैं।

श्री राम तीर्थ मंदिर, अमृतसर

अमृतसर से 11 किमी दूर अमृतसर–चोगांवा रोड पर प्राचीन व ऐतिहासिक धार्मिक स्थल 'श्री राम तीर्थ मंदिर' स्थित है। यह मंदिर भगवान राम को समर्पित है। न केवल इस मंदिर का, अपितु इस पावन स्थली का भी इतिहास रामायण काल से जुड़ा है।

यहाँ महर्षि वाल्मीकि का आश्रम और एक कुटी (झोपड़ी) स्थित है। ऐसी मान्यता है कि श्री राम द्वारा माता सीता का परित्याग करने के पश्चात् ऋषि वाल्मीकि ने उन्हें इसी स्थान पर अपने आश्रम में आश्रय दिया था। तब माता सीता ने यहाँ इस कुटी में ही निवास किया था, इसी कारण इसे माता सीता की आश्रयी स्थली भी कहा जाता है।

यहीं पर लव और कुश का जन्म हुआ था। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना भी यहीं की थी। इसी आश्रम में उन्होंने लव और कुश को शस्त्र चलाने की शिक्षा भी दी थी।

जब श्री राम ने अश्वमेध यज्ञ के लिए घोड़ा छोड़ा था, तब इसी स्थान पर लव–कुश ने उस घोड़े को पकड़ा था और श्री राम के साथ युद्ध भी किया था।

इस मंदिर के समीप ही एक सरोवर है, जिसे बहुत पावन माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस सरोवर को हनुमान जी ने खोदकर बनाया था। इस सरोवर की परिधि 3 कि.मी. है और इसके आस–पास अनेक मंदिर बने हुए हैं। दूर–दूर से श्रद्धालु और साधु–संत यहाँ स्नान करने आते हैं। सरोवर के चारों ओर 30 फुट चौड़ा पथ बना हुआ है, सरोवर में स्नान करने के पश्चात् भक्त इस सरोवर की परिक्रमा करते हैं। यहाँ एक प्राचीन बावली भी है, माना जाता है कि सीता माता यहाँ स्नान किया करती थीं। इसे 'माता सीता दी बावली' कहा जाता है। इस बावली में स्नान कर निःसंतान महिलाएं संतान प्राप्ति की प्रार्थना करती हैं। यदि कभी अमृतसर आगमन होता है तो स्वर्ण मंदिर अमृतसर के साथ–साथ इस मनोहर स्थल की यात्रा जरूर करें।

मंदिर के समीप ही प्राचीन श्री रामचंद्र मंदिर, जगन्नाथपुरी मंदिर, राधा–कृष्ण मंदिर, राम, लक्ष्मण, सीता मंदिर, महर्षि वाल्मीकि जी का धूना, सीता जी की कुटिया, श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर, सीता राम–मिलाप मंदिर जैसे प्रमुख धार्मिक स्थल स्थित हैं, जो रामायण की याद दिलाते हैं। बेघर लोग इस मंदिर में आकर ईंटों के छोटे–छोटे घर बनाकर मन्नत मांगते हैं कि हमें अपने घर की प्राप्ति हो।''

चंडीगढ़ के दर्शनीय स्थल

अश्वनी कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

शिवालिक पर्वत की तलहटी में बसा चंडीगढ़ शहर पंजाब और हरियाणा की संयुक्त राजधानी है। यह केंद्र शासित प्रदेश है। यह शहर उत्तर भारत का एक सुनियोजित ढंग से बसाया गया शहर है। शहर के दर्शनीय स्थल, इसके खूबसूरत बाग, साफ–सुथरी सड़कें और सुनियोजित तरीके से सजे बाजार देशी–विदेशी पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। वास्तुकार ली कारबूजिए और उसके सहयोगियों द्वारा बनाया गया यह योजनाबद्ध शहर सैक्टरों में बँटा हुआ है। इस शहर की चौड़ी व साफ–सुथरी सडकें इसकी उत्कृष्ट योजना को दर्शाती हैं। यहाँ न तो घुमावदार तंग गलियां है और न ही गगनचुंबी इमारतें हैं। इसकी स्वच्छता बनाए रखने का शायद यह भी एक मुख्य कारण है।

चंडीगढ़ शहर का नाम चंडी देवी के नाम पर पड़ा है। शहर से केवल 15 किलोमीटर की दूरी पर यहाँ एक माता चंडी देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। जहाँ पर्यटकों की भारी भीड़ देखने को मिलती है। इस शहर की एक विशेषता यह भी है कि यहाँ बहुत कम समय में तथा बहुत कम दूरी पर स्थित अनेक विश्व स्तरीय दर्शनीय स्थलों को देखा जा सकता है। अपनी अद्‌भुत सुंदरता के कारण ही यह शहर "सिटी ब्यूटीफुल" के नाम से भी जाना जाता है। चंडीगढ़ के दर्शनीय स्थल इस प्रकार हैं:–

कैपिटल कॉम्पलैक्स: कैपिटल कॉम्पलैक्स चंडीगढ़ के सैक्टर–1 में स्थित है। यहाँ एक ही क्षेत्र में सचिवालय, उच्च न्यायालय, ओपन हैंड मान्यूमेंट आदि अनेक इमारते हैं। इनकी बनावट और यहाँ के आस–पास का वातावरण, साफ–सफाई की व्यवस्था दर्शनीय है तथा एक अलग अनुभव प्रदान करती हैं। चंडीगढ़ के दर्शनीय स्थल की सैर पर आने वाले पर्यटक यहाँ का भ्रमण जरूर करते हैं।

रॉक गार्डन: यह चंडीगढ़ के दर्शनीय स्थलों में काफी प्रसिद्ध और खूबसूरत पार्क है। यहाँ की सुंदरता सैलानियों का दिल जीत लेती है। यह अपनी किस्म का एक अनूठा गार्डन है। प्रसिद्ध कलाकार नेकचंद द्वारा रचित इस गार्डन में बेकार तथा टूटी–फूटी वस्तुओं से अनूठी कलाकृतियों का निर्माण किया गया है जो किसी कल्पनालोक से कम नहीं है। इसके अलावा यहाँ खूबसूरत फव्वारे, झरने, रंग–बिरंगे फूल, हरे–भरे बाग–बगीचे पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यह पार्क हर रोज सुबह 10 बजे पर्यटकों के लिए खोला जाता है।

सुखना झील: यह झील भी चंडीगढ़ के सैक्टर–1 में स्थित है। यह झील शिवालिक पहाड़ की तलहटी में अप्राकृतिक रूप से बनाई गई है। इस झील में अनेक प्रकार की मछलियां भी हैं जिन्हें पकड़ने से पहले पर्यटन

विभाग से अनुमति लेनी पड़ती है। इस झील में पर्यटक नौका विहार का आनंद भी उठा सकते हैं।

रोज गार्डन: यह खुबसूरत गार्डन चंडीगढ़ के सैक्टर–16 में स्थित है। यह लगभग 30 एकड़ भू–भाग में बनाया गया है तथा 1600 से भी अधिक किस्मों के गुलाब के फूलों वाला यह बाग एशिया का सबसे बड़ा गुलाब के फूलों का बाग है। यहाँ का सौंदर्य पर्यटकों को आश्चर्य चकित कर देता है। फरवरी माह में यहाँ कई किस्म के गुलाब खिले रहते हैं। उस समय यहाँ रोज फेस्टिवल भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दौरान इस पार्क में खूब पर्यटक फोटोग्राफी करते हैं। इस बाग के मध्य में 70 फुट का एक फव्वारा भी है जो इसकी सुंदरता में चार चाँद लगाता है। यह गार्डन अप्रैल से सितंबर के महीनों में सुबह 5 बजे से शाम 9 बजे तक खुला रहता है। शेष महीनों में यह एक घंटा देरी से खोला जाता है। रोज गार्डन चंडीगढ़ के दर्शनीय स्थलों में सबसे अधिक देखा जाने वाला स्थल है।

गांधी भवन: गांधी भवन चंडीगढ़ के सैक्टर–14 में स्थित है। यह एक भव्य इमारत है। इस इमारत के बारे में कहा जाता है की यह शहर की सबसे फोटोजनिक इमारत है।

लेजर वैली: लेजर वैली चंडीगढ़ के सैक्टर–10 में स्थित है। यह एक बेहद ही खुबसूरत सैरगाह है। यहाँ का शांत वातावरण व प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों का मन मोह लेता है। यहाँ के हरे–भरे बाग व फूलों से भरे रास्ते पर्यटकों को सुखद अनुभूति प्रदान करते हैं। यहाँ चारों ओर नैसर्गिक सौंदर्य बिखरा हुआ है। लेजर वैली नाम की यह सैरगाह लंबी–चौड़ी, साफ–सुथरी एवं मनोहारी सैरगाह है। इस वैली में कदम रखने के बाद पर्यटकों का यहाँ से जाने का मन नहीं करता।

टैरेस गार्डन: टैरेस गार्डन चंडीगढ़ के सैक्टर–33 में स्थित है। रंग–बिरंगे मौसमी फूलों से भरा यह गार्डन 10 एकड़ भूमि में फैला हुआ है। यहाँ अनेक प्रकार के मौसमी फूलों की भरमार है। इस गार्डन को अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। यह बॉटनी (वनस्पति शास्त्र) के शोधकर्ताओं के लिए एक आदर्श अध्ययन केंद्र है।

अनुच्छेद 344 राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति का प्रावधान करता है।

कला सागर: कला सागर चंडीगढ़ के सैक्टर–10 में स्थित है। यहाँ सैंकड़ों किस्म की टूटी–फूटी चीजों से कई आकर्षक नमूने तैयार किए गए हैं। इसलिए यह अपने आप में अनूठा है। कला सागर की अद्भुत बनावट व खूबसुरती पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। इसका निर्माण विजयपाल गोयल ने करवाया था।

बोगेनवेलिया गार्डन: बोगेनवेलिया गार्डन चंडीगढ़ के सैक्टर–3 में स्थित है। इस पार्क में कई किस्म के रंग–बिरंगे बोगेनवेलिया के सुंदर फूल हैं। यह पार्क लगभग 20 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है।

चंडीगढ़ संग्रहालय: चंडीगढ़ संग्रहालय चंडीगढ़ के सैक्टर–10 में स्थित है। आर्किटैक्ट ला करबूजिए द्वारा बनाई गई इस संग्रहालय की इमारत वास्तुशिल्प कला की दृष्टि से बेजोड़ इमारत है। इस संग्रहालय में कांगड़ा,

राजस्थानी व मुगलों के जमाने की कलाकृतियां संग्रहित हैं, जो कला प्रेमियों को अचंभित करती हैं। इस संग्रहालय के पास एक आर्ट गैलरी भी है जहाँ पुराने और आधुनिक समय की कला के उत्कृष्ट नमूने संग्रहित हैं। यह संग्रहालय सोमवार को बंद रहता है। इसे देखने का समय सुबह 10:00 बजे से सांय 4:30 बजे तक है।

टोपिअरी पार्क: जीव–जंतुओं के आकार के अलग–

अलग पौधे तथा साड़ियों से निर्मित कृतियाँ इस पार्क के आकर्षण का केंद्र हैं। यह पार्क चंडीगढ़ के सैक्टर–35 में स्थित है।

आशा है कि चंडीगढ़ के रमणीय स्थलों के बारे में जानकर आपको काफी अच्छा लगा होगा। यदि आप कभी चंडीगढ़ आते हैं तो यह लेख आपका चंडीगढ़ दर्शन के लिए मार्गदर्शन भी करेगा तथा आप चंडीगढ़ के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण का भरपूर आनंद ले सकेंगे।

क्रिसमस और राफ्टिंग

दिवांशी वर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

क्रिसमस का त्यौहार देश भर में धूमधाम से मनाया जाता है। क्रिसमस से ही सर्दियों की छुट्टियों की शुरुआत होती है। मैंने और मेरे कुछ कॉलेज के दोस्तों ने क्रिसमस पर छुट्टियाँ लेकर घूमने जाने की योजना बनायी। सर्दियों में लोग बर्फ देखने पहाड़ों में जाते हैं या रेगिस्तान की धूप का मजा लेने जाते हैं। चूंकि कुछ ही दिन पहले हम राजस्थान जाकर आए थे, इस बार हमने सोचा कि कुछ तूफानी करते हैं। फैसला हुआ कि 25 दिसम्बर को इस बार हम ऋषिकेश में राफ्टिंग करने जाएंगे। सोचकर ही जैसे कंपकंपी सी आ गयी थी। 24 दिसम्बर की शाम को सब दोस्त जिन्हें दूसरे शहर से आना था, वे चंडीगढ़ पहुँच गए और 25 की सुबह हम सब ऋषिकेश के लिए रवाना हो गए। पुराने दोस्तों से इतनी देर बाद मिलने की खुशी अपने आप में ही अतुलनीय होती है। पुरानी बातें याद करते हुए, हँसते–गाते हुए सफर यूं गुजर गया मानो चंडीगढ़ शहर के दूसरे कोने में ही ऋषिकेश बसा हो।

जब तक हम ऋषिकेश पहुँचे, दोपहर हो गयी थी। मौसम भी बदलने लगा था। बादलों ने सूर्य देवता को यूं घेर लिया कि ऐसा लग रहा था मानो रात हो गयी है। हल्की–हल्की बूंदा–बांदी भी होने लगी थी जिस कारण ठंड भी बहुत बढ़ गयी थी। ऋषिकेश शहर में प्रवेश करने से लेकर लक्ष्मण झूले तक जाना किसी जद्दोजहद से कम नहीं था। जैसे–तैसे हम लक्ष्मण झूले पर पहुँचे, 3.00 बज चुके थे। गाड़ी पार्किंग में लगाकर हम बाजार की ओर गए। जहाँ से हमें राफ्टिंग के लिए गाड़ी मिलनी थी जो हमें उस जगह पर लेकर जाने वाली थी जहाँ से राफ्टिंग की शुरुआत होती है, जिसे 'क्लब हाउस' बोला जाता हैं। यह बाजार से लगभग 12 किलोमीटर दूर है। बीस से तीस मिनट तक इंतजार करने के बाद एक बोलेरो गाड़ी आई जिस पर एक बड़ी सी राफ्ट मजबूती से बंधी हुई थी। अब हम सबकी धड़कने थोड़ी–थोड़ी तेज होने लगी थी। उत्साह हम सबकी आँखो में साफ चमक रहा था। ठंड में सिकुड़ते हुए हम सब गाड़ी में बैठ गए। हमारे गाइड ने रास्ते में हमें बताया की सर्दी के कारण अंधेरा जल्दी हो जायेगा, इसलिए हम सभी को क्लब हाउस पहुँचकर जल्दी–जल्दी से इस साहसिक कार्य की शुरुआत करनी होगी। हमारे पेट

में मानों तितलियाँ उड़ने लगी ओर धड़कनें भी रफ्तार पकड़ने लगी। क्लब हाउस का दृश्य इतना खूबसूरत था कि शब्दों में बयान कर पाना बेहद मुश्किल है। एक तरफ तेजी से बहती हुई सुंदर गंगा नदी, दूसरी ओर बिछी हुई सफेद रेत, पहाड़ों के बीच में खड़े हुए ऐसा लग रहा था मानो जन्नत में आ गए हों। हमारे गाइड ने हमें राफ्टिंग के कुछ नियम समझाए और हमें लाइफ जैकेट और हेलमेट पहनने को दिए। हम सभी तैयार होकर राफ्ट में बैठे। गाइड ने हमारी राफ्ट को नदी के बीच में धकेला ओर इस तरह हमारी साहस की परीक्षा शुरू हो गयी। गाइड के इशारों पर हमने पैडल चलाया–'फॉरवर्ड, बैक्वार्ड एण्ड स्टॉप'। फिर अचानक से गाइड ने बोला 'फर्स्ट रैपिड' इस क्षण में हमारा उत्साह चोटी पर था क्योंकि गाइड ने बताया था कि इस कमांड का मतलब है कि राफ्टिंग का वह हिस्सा आ रहा है जिसमें सबसे ज्यादा खतरा रहेगा, खतरनाक लहरों से हमारा सामना होगा। अगले ही क्षण सामने से तेज–तेज लहरें आई और हमारी पूरी राफ्ट को भीगो गयी। हम सभी ने गंगा स्नान कर लिया। गंगा का ठंडा पानी ओर पहाड़ों की सर्द हवा पर फिर भी ठंड से ज्यादा आनंद आ रहा था। इसी तरह लहरों का सामना करते हुए रैपिड गुजर गया। थोड़ी दूर जाकर लहरें काबू में आई और हमारे गाइड ने हमें बोला, 'पैर बाहर की तरफ निकालिए, हमने बिलकुल वैसा ही किया। अगली बात सुनके हम सभी चोंक गए–'रस्सी को पकड़ के पानी में कूद जाइये'। हम सभी हँसने लगे और एक दूसरे को देखने लगे। इतने में ही हमारे बीच में से एक लड़का अचानक से पानी में कूद गया। उसे देखकर हम सब में साहस का छोटा–सा अंश आया और हम सभी गंगा जी के ठंडे–ठंडे पानी में कूद पड़े।

वह पल अतुलनीय था। क्रिसमस का दिन, गंगा मैया की आरती, दियों की जगमगाती हुई कतार और गंगा के बीचों–बीच हम और हमारी राफ्ट।

अनीश सूद
सहायक

एक बच्चा गायब हो गया,
किसी ने उसका फोटो व्हाट्सएच पर डाल दिया,
कि बच्चे को ढूंढ़ने के लिए फोटो फॉरवर्ड करें।
शाम को बच्चा वापस आ गया ।
लेकिन आज एक साल हो गया
और
उसका फोटो अब भी फॉरवर्ड हो रहा है।
बच्चा जहाँ भी जाता है,
लोग उसे पकड़ कर उसके घर छोड़ आते हैं।

श्री सुरेन्द्र कुमार, सहायक विशिष्ट उपलब्धियों पर ढेरों शुभकामनाएं

श्रीमती सुनीता रानी, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी को उनके सुपुत्र श्री अतुल कुमार की इस उपलब्धि पर ढेरों शुभकामनाएं

एशिया के शीर्ष दस गोलकीपरों में शामिल हुए शहर के अतुल

संवाद न्यूज एजेंसी

चंडीगढ़। शहर के अतुल कुमार हैंडबॉल के खेल में एशिया के टॉप 10 गोलकीपरों में शुमार हो गए हैं। यह सूची एशियन हैंडबॉल फेडरेशन ने जारी की है।

पिछले महीने सऊदी अरब में एशियन हैंडबॉल चैंपियनशिप का आयोजन किया गया था। इसके मुकाबले 18 से 31 जनवरी तक खेले गए। चैंपियनशिप में भारतीय सीनियर हैंडबॉल टीम ने कप्तान अतुल कुमार के नेतृत्व में हिस्सा लिया था। कप्तान के साथ ही अतुल ने गोलकीपर की भूमिका भी निभाई थी।

रैंकिंग के आधार पर टॉप 10 में आए

सऊदी अरब में एशियन हैंडबॉल चैंपियनशिप में भारत सहित अन्य देशों से 16 हैंडबॉल टीमों ने शिरकत की थी। इन टीमों से कुल 41 गोलकीपर भी शुमार हुए थे। चैंपियनशिप पर एशियन हैंडबॉल फेडरेशन की नजरें बनी हुई थीं। चैंपियनशिप के बाद प्रदर्शन के आधार पर शीर्ष 10 गोलकीपरों की सूची तैयार की गई, जिसमें अतुल भी शामिल हैं।

उपलब्धियां

- वर्ष 2016 गुवाहाटी में साउथ एशियन गेम्स
- वर्ष 2017 में एशियन लीग हैंडबॉल चैंपियनशिप में खेले
- वर्ष 2018 में इंडोनेशिया में एशियन गेम्स में खेले
- वर्ष 2018 में दक्षिणी कोरिया एशियन हैंडबॉल चैंपियनशिप में खेले

कोचों ने दी बधाई

अतुल ने शहर के यूटी खेल विभाग के सीनियर हैंडबाल कोच रहे रविंदर सिंह लाडी से हैंडबॉल के खेल की शुरुआती ट्रेनिंग ली। इसके बाद सेक्टर-8 स्थित डीएवी स्कूल के हैंडबॉल कोच डॉ. सुनील कुमार ने कोचिंग दी। एशिया के टॉप 10 गोलकीपर में शुमार होने के बाद दोनों कोचों ने बधाई देते हुए उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

हैंडबॉल चैंपियनशिप के लिए चंडीगढ़ के अतुल कुमार को भारतीय टीम की कमान

सऊदी अरब में 31 जनवरी तक होंगे मुकाबले, चैंपियनशिप में शहर से कुल 4 खिलाड़ी टीम इंडिया में शामिल

संवाद न्यूज एजेंसी

चंडीगढ़। शहर के अतुल कुमार को 20वीं एशियन हैंडबॉल चैंपियनशिप के लिए भारतीय सीनियर हैंडबॉल टीम का कप्तान बनाया गया है। एशियन चैंपियनशिप का आयोजन सऊदी अरब में 18-31 जनवरी तक किया जाना है। इसमें हिस्सा लेने के लिए भारतीय हैंडबॉल टीम सोमवार को सऊदी अरब के लिए रवाना हो गई। कप्तान बनाए जाने के बाद अतुल के परिवार में खुशी का माहौल है।

चैंपियनशिप में भारत सहित अन्य देशों की 18 हैंडबॉल टीमें भाग ले रही हैं। भारतीय टीम में अतुल कुमार के साथ तीन और खिलाड़ी मितुल, अभिषेक और अर्जुन भी शामिल हैं।

ये चारों सेक्टर-8 स्थित डीएवी हैंडबॉल सेंटर के ट्रेनी हैं। शहर के चारों खिलाड़ियों को चंडीगढ़ हैंडबॉल एसोसिएशन के प्रधान राहुल तलवार, कोच रविंदर सिंह लाडी और डॉ. सुनील कुमार ने शुभकामनाएं दीं।

भारतीय टीम के कप्तान अतुल कुमार। संवाद

दो कोचों की बदौलत यहां तक पहुंचा

कप्तान अतुल कुमार ने शहर के यूटी खेल विभाग के सीनियर हैंडबॉल कोच रहे रविंदर सिंह लाडी से हैंडबॉल की शुरुआती ट्रेनिंग ली। लाडी ने उन्हें तराशकर एक बेहतरीन खिलाड़ी बनाया। इसके बाद सेक्टर- 8 में हैंडबॉल कोच डॉ. सुनील कुमार ने कोचिंग दी। अतुल ने कहा कि इस मुकाम तक पहुंचने में दोनों कोचों की कड़ी मेहनत छुपी है।

एशियन हैंडबॉल चैंपियनशिप में हिस्सा लेने वाली भारतीय हैंडबॉल टीम। संवाद

अतुल बोले- चार टीमों से मिलेगी कड़ी टक्कर

भारतीय कप्तान अतुल कुमार ने बताया कि एशियन हैंडबॉल चैंपियनशिप के लिए हैंडबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया ने मजबूत टीम चुनी है। पहले ट्रायल उसके बाद कैंप में टीम के खिलाड़ियों ने कड़ी मेहनत की है। एशियन चैंपियनशिप में पूरी तैयारी के साथ टीम इंडिया उतरेगी। उन्होंने बताया कि चैंपियनशिप में भारत को कतर, बेहरीन, कोरिया और सऊदी अरब की टीमों से कड़ी टक्कर मिलने वाली है।

सतलुज धारा 2021-22

बुद्ध पीस पार्क, चंडीगढ़

क.रा.बी.नि. ESIC सामाजिक सुरक्षा SOCIAL SECURITY

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़

ऑनलाइन पढ़ने/डाउनलोड करने के लिए सामने दिए गए वेबलिंक का प्रयोग करें

क) ई–पत्रिका:
https://tinyurl.com/yrx84x7d
ख) पीडीएफ:
https://tinyurl.com/474wsrcr

स्मार्टफोन/टेबलेट पर पढ़ने/डाउनलोड करने के लिए क्यूआर स्कैनर से सामने दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें

ई–पत्रिका   पीडीएफ